दिसम्बर-२०२२ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

दिसम्बर-२०२२

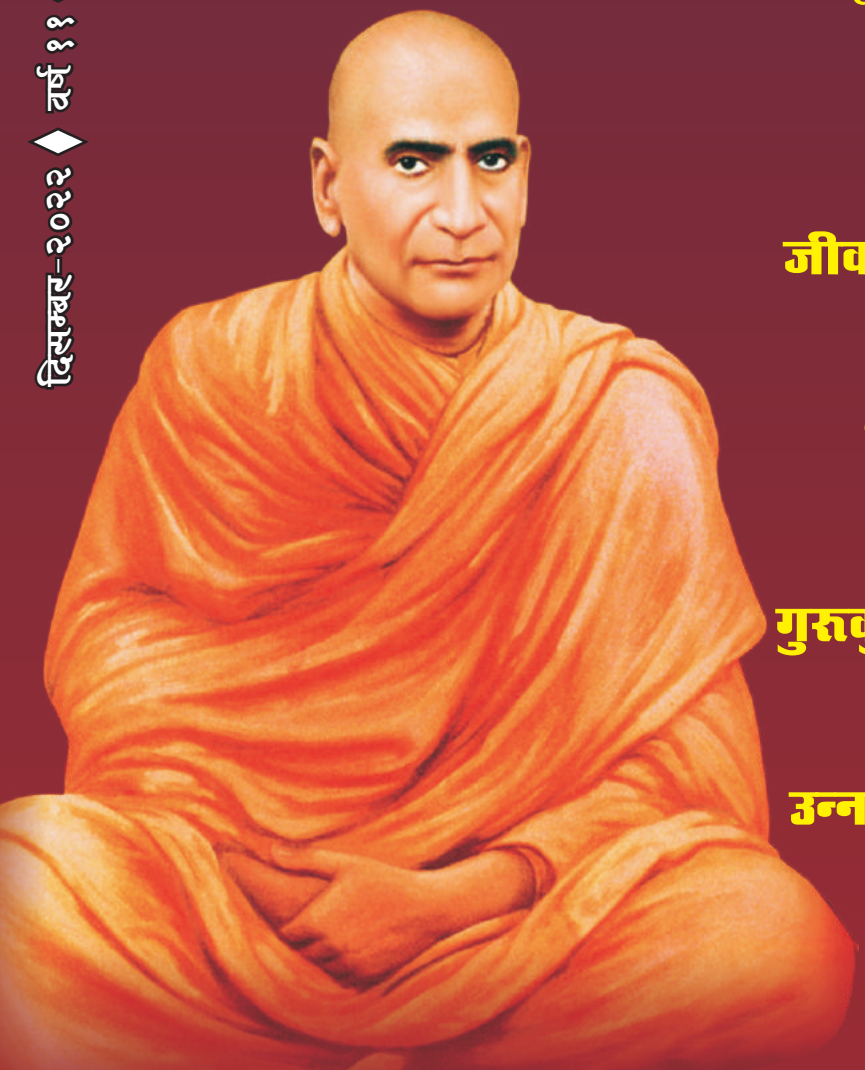

जीवन बदला, सीरत बदली,
सब दुष्कर्म बिसारे।
राष्ट्र प्रेम ही सर्वोपरि है,
श्रद्धानन्द हैं प्यारे।
गुरुकुल खोले, बने तेजस्वी,
युवा शक्ति प्रण धारे।
उन्नति के शिखरों को छुआ,
सत्यार्थप्रकाश उर धारे।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १३४

हर समय स्वाद ही स्वाद

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH
मसाले

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२३
मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी
विक्रम संवत्
२०७९
दयानन्दाब्द
१९८

December - 2022

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २८

हलचल २९

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थ मित्र बनें
१३	योद्धा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द
१५	सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/२२
१६	बाल मन पर पड़ता प्रभाव
२०	गुरु नानक देव
२३	अच्छाई को फौरन अमल .....
२५	अंग्रेजी की गुलामी छोड़ो
२६	Practice makes perfect
२७	जल्दी डिनर करें और स्वस्थ रहें
३०	सत्यार्थ पीयूष- वेद ज्ञान

स्वामी: श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ११ अंक - ०८

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

शरीररुपी रथ से हितसाधन

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।
आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि।। - अथर्ववेद ८/१/६

पुरुष- हे पुरुष! हे नागरिक मनुष्य! **ते उद्यानम्**- तेरे लिए ऊपर जाना है, **न अवयानम्**- न कि नीचे जाना है। **इमम् अमृतम्**- इस अमृत= मुक्तिदाता, **सुखं रथम्**- (तथा) सुखदाता रथ पर, **आ+रोह हि**- चढ़ ही। **जीवातुं ते**- जीने के लिए तुझे, **दक्षतातिम्**- दक्षता, उत्साह का विस्तार, **कृणोमि**- करता हूँ। **अथ**- और इसके बाद, **जिर्विः**- स्तुति योग्य बनकर, **विदथम् आवदासि**- ज्ञान उपदेश कर।

व्याख्या

कई मनुष्य किसी कार्य में असफल होकर उदास हो जाते हैं और यह समझने लगते हैं कि हम उन्नति कर ही नहीं सकते। ऐसों का माता से भी अधिक हितकारिणी भगवती जगदम्बा साहस देती हुई कहती है-

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।

हे पुरुष! मर्द! तेरे लिए आगे बढ़ना है, न कि पीछे हटना।

प्रभु मनुष्य को यहाँ 'पुरुष' कह रहे हैं। अरे! तू मर्द है। नर है। क्यों नपुंसकों की भाँति जी छोड़कर, दम तोड़कर मुमूर्षु बन रहा है? महाभारत में अर्जुन को लक्ष्य कर कहा गया है-

क्लैब्यं मा स्म गमः

'अरे! हीजड़पन मत दिखा।' मर्दानगी, पुरुषत्व कर्त्तव्य-पालन में है, न कि कर्त्तव्य (स्वधर्म) से विमुख होने में।

जगदम्बा ने दूसरे स्थान पर कहा है-

आरोहणमाक्रमणं जीवतोजीवतोयनम्। - अथर्ववेद ५/३०/७

'पुत्र! जितने प्राणी हैं, जो भी सांस लेता है, उन सबका लक्ष्य ऊपर उठना, आगे बढ़ना है।'

भगवान् की सृष्टि-रचना ही देख लो, इसमें बढ़ने के भाव हैं। अवनति= गिरना, मरना जड़ का धर्म है, चेतन में गिरना कैसा? चेतन आगे ही बढ़ेगा। चेतन में गति होती है या वह स्वयं गति करे अथवा दूसरों को गति दे। गति आगे चलने का नाम है न कि पीछे हटने का, अतः माँ उत्साह बढ़ाती हुई कहती है-

उद्यानं ते पुरुष, न अवयानम्।

माँ! मैं कैसे सफल हो सकता हूँ, मैं तो हार गया। मुझसे कुछ नहीं बनने का?

न वत्स! न।

जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।

'जीने के लिए दक्षता की सारी सामग्री मैं तुझे देती हूँ।'

ले, सबसे पहले इस शरीररूपी रथ पर चढ़-

'आ हि रोहेमम्' 'अरे! चढ़, इस पर चढ़।'

यह शरीर ऐसा नहीं जिसकी तू उपेक्षा करे। मानव-तन बड़े पुण्यों से मिलता है। इस रथ की महिमा को समझ। देख-

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः। - यजुर्वेद २९/४३

'इस रथ पर बैठा उत्तम सारथि घोड़ों को (इन्द्रियों को) आगे कर जहाँ-जहाँ चाहता है, ले-जाता है।'

अर्थात् इस रथ (रमणसाधन) पर आरूढ़ होकर आत्मा यदि सारथि उत्तम रख ले तो जहाँ चाहे वहाँ पहुँच जाए। इसी कारण

इनको-

अमृतं सुखं रथम्।

अमृत (मोक्ष) और सुख (सांसारिक सुख) देनेवाला 'रथ' कहा है।

योगियों ने इस वैदिक तत्त्व का अपनी भाषा में अनुवाद करते हुए कहा-

भोगापवर्गार्थं दृश्यम्।

'यह शरीर और शरीर-जैसे अन्य दृश्य पदार्थ जीव को भोग और मोक्ष दिलवाते हैं।'

इसी सूत्र के पूर्वार्द्ध में इसका शील तथा स्वरूप भी ऋषि ने बतला दिया- 'प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकम्'- इसमें कभी-कभी प्रकाश होता है, कभी क्रिया (गति) तथा कभी-कभी स्थिति-गति का अभाव होता है; क्योंकि इसका स्वरूप पंचभूतों तथा इन्द्रियों के सहारे बना है। प्रकाश सत्त्व का वाचक है, क्रिया रजोगुण की द्योतक है, स्थिति तमोगुण की बोधक है। पृथिवी, पय, पावक, पवन तथा पुष्कर (आकाश) पंचभूत हैं; शरीर की रचना इससे होती है। इस शरीर का कार्य-व्यवहार आँख, नाक, कान, त्वचा, रसना, ज्ञानेन्द्रियों तथा जिह्व, हस्त, पाद, पायु, उपस्थ आदि कर्मेन्द्रियों तथा अन्तःकरण द्वारा निष्पन्न होता है। संसार पर गहरी दृष्टि डालिए, इसके अतिरिक्त संसार में और कुछ भी ज्ञान गोचर न होगा।

यह सारी रचना निष्प्रयोजन नहीं है। इसका प्रयोजन भोग तथा मोक्ष बतलाया गया है। एक-एक इन्द्रिय से होनेवाले अनुभवों को भोग कहते हैं। भोग-भावना से छूटना मोक्ष है। छूटना-उठना, ऊपर उठना है। भोग-पाश में बँधना नीचे गिरना है, अतः वेद का यह कहना- 'उद्यानं ते पुरुष नावयानम्' मनुष्य जीवन का लक्ष्य उद्यान- (ऊपर उठना) मोक्ष है- अत्यन्त उचित है।

वेद की शब्द-रचना अलौकिक है। इसमें रथ के दो विशेषणों 'अमृत' और 'सुख' में से 'अमृत' को पहला स्थान दिया गया है। इसका गूढ़ आशय है- अरे मनुष्य! मोक्ष प्राप्त कर। भोगों में मत फँस। विषयों का सुख प्राप्त करने की वस्तु नहीं, वह आनुषंगिक है। मुख्य उद्देश्य अमृत की प्राप्ति है।

जगदम्बे! तेरी कृपा से मैंने इस रथ पर सवारी की और हो गया मैं अमृत= अ+मृत= न+मृत (मौत के पाश से मुक्त)। तेरा धन्यवाद! मैं भी तेरी कृपा से जिर्वि (स्तुति के योग्य) बन गया हूँ।

वत्स! मेरा धन्यवाद करना है, तो लोगों को-

विदथमावदासि-

'ज्ञान का, ज्ञान-प्रतिसाधनों का उपदेश कर।'

तुझे भले ही कुछ प्राप्त करना नहीं रहा, किन्तु लोग भोग के पाश में फँस गये हैं। उनको वह साधन भी बता, जिससे तू अमृत बन सका। तभी तेरी जीवन्मुक्ति सफल है।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्द तीर्थ

साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज हमने गुलाब बाग के अन्दर नवलखा महल में यहाँ बने चित्रदीर्घा, १६ संस्कार वीथिका, रामायण कक्ष, महाभारत कक्ष, मेवाड़ कक्ष आदि देखे। स्वामी दयानन्द जी के सम्पूर्ण कृतित्व एवं व्यक्तित्व के विषय में अद्भुत जानकारी प्राप्त की। यहाँ के गाइड के द्वारा हमें अविश्वसनीय एवं बहुत ही सुन्दर तरीके से पूरी जानकारी दी गई। १६ संस्कार के बारे में और थिएटर के अन्दर एक छोटे से चलचित्र के माध्यम से हमें बहुत ही अच्छी जानकारी प्राप्त हुई। आज हम बहुत खुश हैं। हर एक भारतीय को इस गुलाब बाग के अन्दर नवलखा महल में एक बार अवश्य आना चाहिए। यहाँ आ करके अपने भारतीय संस्कृति एवं भारतीय सभ्यता एवं हमारे महापुरुषों के विषय में तथा सोलह संस्कार के बारे में जानने का बहुत ही सरल एवं अच्छा माध्यम है। - मानस कुमार, गुजरात

आज हम चार भाई उदयपुर में नवलखा महल देखने आए थे। इसमें बनी सारी ज्ञानवर्द्धक कृतियाँ हमारे ज्ञान हेतु सर्वोपरि हैं। यहाँ पर जो ज्ञान हमें गाइड द्वारा आर्ट गैलरी में बताया गया, यह सब हमने जीवन में पहली बार देखा एवं सुना। गाइड के द्वारा सोलह संस्कार के विषय में बताया गया यह जानकारी प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में बहुत कुछ बदलाव ला सकता है। हमें चिलचित्र के द्वारा एक छोटी सी मूवी दिखाई गई जो अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक थी। हम सब यहाँ आ करके बहुत ही खुश हैं। हम सभी भारतीयों को यह कहना चाहते हैं कि एक बार यहाँ आ करके इस जगह को अवश्य देखना चाहिए। नवलखा महल को देखने पर उनके हृदय में देश के प्रति देशभक्ति उत्पन्न होगी। जय हिन्द जय भारत जय। - हड़मत सिंह

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर। बैंक एकाउन्ट का विवरण :
AC. No. : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं।

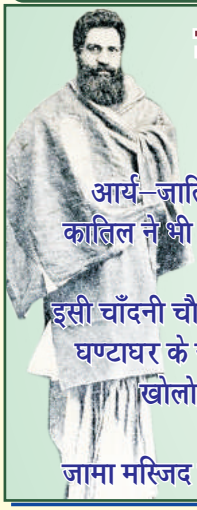

स्वामी श्रद्धानन्द

यही रंग रंगाने श्रद्धानन्द,
दिल्ली में ही आते हैं,
आर्य–जाति की खातिर, प्राणों की भेंट चढ़ाते हैं।
कातिल ने भी पीकर पानी, फिर पिस्तौल को खोला,
मेरा रंग दे बसंती चोला।।

इसी चाँदनी चौक के अन्दर, घण्टाघर था खड़ा हुआ,
घण्टाघर के नीचे लोगों! शेर बब्बर था अड़ा हुआ।
खोलो गन–मशीनें खोलो, मैंने सीना खोला,
मेरा रंग दे बसंती चोला।।

जामा मस्जिद के मिम्बर पर, श्रद्धानन्द जब आते हैं,
दयानन्द की जय के नारों से, आकाश गुंजाते हैं।
मस्जिद में छा गया सन्नाटा, वेद–मन्त्र जब बोला,
मेरा रंग दे बसंती चोला।।

जलियाँवाले बाग के अन्दर, कौन मोर्चे पर आया,
कांग्रेस का अध्यक्ष बना, और हिन्दी को ही अपनाया।
अली ब्रादर और गाँधी के, आगे वह न डोला,
मेरा रंग दे बसंती चोला ।।

गंगा और यमुना की धरती, इनको मूल न भाती है,
अरब की रेत और ऊँट की बोली, इनको खूब सुहाती है।
इसी वास्ते गाते फिरते, मदीने बुलाले मौला,
मेरा रंग दे बसंती चोला।।

साभार- विश्व कल्याण दिव्य भजनमाला
संकलनकर्त्ता- (स्मृतिशेष) वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य

आत्म निवेदन

वर्जित फल वर्जित क्यों?

यह प्रश्न अनेक बार मनुष्य के समक्ष आता है कि मनुष्य को भाषा और ज्ञान किससे प्राप्त हुआ, कब प्राप्त हुआ? संसार में सृष्टि की उत्पत्ति को लेकर के मोटे तौर पर देखें तो दो प्रकार के विचार सम्मुख आते हैं। पहला विचार है कि सृष्टि सकर्तक है अर्थात् सृष्टि की रचना करने वाली कोई शक्तिमान सत्ता विद्यमान है, उसी ने सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया और उसी ने ब्रह्माण्ड, वनस्पतियाँ तथा मानवेतर प्राणियों के साथ-साथ मनुष्य को भी बनाया। दूसरा जो विचार है वह अर्वाचीन है और आधुनिक विद्वानों द्वारा प्रस्तुत है, उसे हम विकासवादी विचार कह सकते हैं जिसके अनुसार सर्वप्रथम एक कोशिकीय जीव के उत्पन्न होने के बाद अनेक कारकों पर निर्भर नई स्पीशीज बनती चली गईं और इस प्रकार धीरे-धीरे विकास हो करके एक कोशिकीय जीव से अत्यन्त जटिल संरचना मनुष्य तक का निर्माण हुआ।

पहले विचार में पृथ्वी पर धार्मिक तथा जितने मजहबी विचार हैं वे सम्मिलित हैं। वे सभी मानते हैं कि सृष्टि रचना किसी विशेष सत्ता के द्वारा की गई है। यद्यपि उस सत्ता के स्वरूप, उसकी शक्ति, उसके कार्य, उसके स्वभाव और सृष्टि निर्माण की पद्धति इत्यादि-इत्यादि को लेकर के उनके मध्य विचार-विभिन्नता है। उसकी चर्चा इस आलेख में सम्भव नहीं। जहाँ तक उन लोगों का प्रश्न है जो विकासवाद का समर्थन करते हुए किसी ऐसी सत्ता के होने से भी इंकार करते हैं कि जिसने सृष्टि बनाई हो, उनको यदि इस प्रश्न का उत्तर देना हो कि ज्ञान और भाषा किसने बनाई या मनुष्य को सर्वप्रथम किसने प्रदान की तो उनका उत्तर तो क्रमिक विकास पर ही आधारित है कि धीरे-धीरे मनुष्य स्वयं अपने आप भाषा सीख गया। पहले वह जानवरों की तरह इशारों में और कुछ आवाजें निकाल करके बातें करता था धीरे-धीरे वह मानवी भाषा सीख गया। विकासवाद के सन्दर्भ में स्थानाभाव के कारण पूरा मत तो यहाँ व्यक्त नहीं किया जा सकता पर यह निश्चित है कि जब तक इस बात का उत्तर विकासवादियों के पास नहीं है कि प्रथम शरीर या योनि में चैतन्यता किस प्रकार से जड़ सृष्टि के उपरान्त आई जिसके बारे में उनका कहना है हमें इस बारे में कुछ नहीं पता, तब तक उनके द्वारा यह कहना कि भाषा और ज्ञान स्वयमेव विकसित हो गया यह तथ्यों और तर्कों के परे है।

आगे इसकी विशेष चर्चा करेंगे यहाँ केवल इतना कहना पर्याप्त होगा कि देखने में यही आता है कि मनुष्य योनि एक ऐसी योनि है जिसे बिना सिखाए कुछ भी नहीं आता। ऐसी अनेक प्रमाणित घटनाएँ हमारी नजरों के सामने से गुजरती हैं जहाँ ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न हुईं कि मनुष्य का बालक किसी प्रकार से जंगली जानवरों के बीच में रहा, कई वर्षों तक रहा, वह केवल उनकी नकल करते हुए जीवन को तो सुरक्षित रखने में कामयाब रहा परन्तु किसी तरह का बौद्धिक विकास अथवा कोई भाषा अथवा ज्ञान उसके निकट भी नहीं फटका। कारण, भाषा और ज्ञान दोनों ही मनुष्य के सन्दर्भ में नैमित्तिक हैं अर्थात् किसी निमित्त से ही प्राप्त होते हैं। एक उदाहरण अंग्रेजों के शासन काल का आगरे का है वह हम यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

'बात १८६७ की है। तब आगरा में चारों ओर जंगल था। आगरा किला और उसके एक ओर कुछ बस्तियाँ थीं। ब्रिटिशर्स का अधिकांश समय शिकार करने में बीतता था। ऐसे ही ब्रिटिश शिकारियों ने शिकार के दौरान जंगल में छह साल के मानव बालक

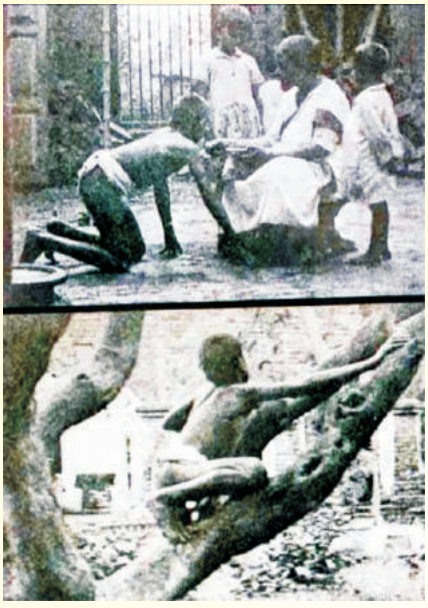

को देखा। उसकी हरकतें पशु जैसी थीं। जंगल में मानव बालक को देखकर शिकारी हतप्रभ रह गए। उन्होंने बालक को पकड़ने का प्रयास किया। इस पर एक मादा भेड़िया ने शिकारियों पर हमला कर दिया। इस पर शिकारियों ने मादा भेड़िया को गोली मार दी। यह माना गया था कि यही मादा भेड़िया मानव के बालक को पाल रही थी। मानव का बालक इसका दूध पीता था। अंततः बालक को पकड़ लिया गया। अंग्रेजों ने इसका नाम 'डायना शिंचर' रखा। लोग इसे मानव भेड़िया कहने लगे। वह जानवरों की तरह चलता था। घुर्राता था। कच्चा मांस खाता था। अंग्रेजों ने उसे अकबर का मकबरा सिकन्दरा में रखा। बहुत प्रयास किया कि वह मानव की तरह व्यवहार करे। अंग्रेजों को सफलता नहीं मिली। सन १९०१ में ३४ साल की आयु में डायना शिंचर की मृत्यु हो गई। इतिहासकार राजकिशोर राजे ने इस तथ्य का उल्लेख अपनी पुस्तक तवारीख-ए-आगरा में किया है।

ऐसे अन्य अनेक उदाहरण विश्वभर में हैं, परन्तु उनकी सब की चर्चा करने से आलेख बहुत विस्तृत हो जाएगा। यहाँ इससे हमें कम से कम यह समझने में सहायता मिलती है कि किसी प्रयोग में अथवा संयोगवश ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाए कि कुछ भी सीखने से पहले मनुष्य का बालक या बालिका मनुष्य समाज से दूर किन्हीं परिस्थितियों में रह जाए तो बरसों बीत जाने के पश्चात् भी उसे कुछ नहीं आता, न आ सकता क्योंकि जैसा हमने कहा मनुष्य योनि को नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। यह निमित्त फिर चाहे उसका पिता, माता, अन्य रिश्तेदार अथवा मनुष्य समाज के सदस्य हों।

कोई भी वैज्ञानिक अगर चाहे तो इस पर प्रयोग कर ले। ऐसे प्रयोग बहुतायत में क्यों नहीं हो रहे? इसका उत्तर यही है कि प्रयोग का परिणाम इन वैज्ञानिकों को पूर्व से ही पता है, अतः वे इन प्रयोगों को करने में अनिच्छुक हैं। बताया जाता है कि अकबर के समय में भी ऐसा प्रयोग किया गया था, नतीजा वही था जो हम आपसे निवेदन कर रहे हैं।

मनुष्य के बच्चे को जन्म के कुछ समय पश्चात् ही एक ऐसी जगह रख दें जहाँ कोई मनुष्य न जाए और केवल उसका जीवन सुरक्षित रहे इस बात की व्यवस्था कर दें। ना कभी कोई मनुष्य उसके सम्मुख जाए ना उसके सम्मुख बोले अथवा बात करें तो अनेकों वर्ष पश्चात् भी हम पायेंगे कि उस बालक शारीरिक विकास तो हो जाएगा परन्तु न उसे बोलना आएगा और यहाँ तक कि न ढंग से चलना आएगा। क्योंकि सही बात यह है कि, यद्यपि हमें लगता है कि हम तो अपने आप ही सब कुछ सीख जाते हैं, उसी तरीके से विकासवादियों का यह मत भी सच होना चाहिए कि मनुष्य अपने आप सब कुछ सीख जाता है परन्तु ऐसा है नहीं। बिना जाने, बिना ध्यान दिए, हम जो कुछ सीखते हैं यहाँ तक कि चलना भी सीखते हैं तो हमारा पिता अथवा हमारी माता प्रारम्भ में अंगुली पकड़कर हमें चलना सिखाते है, उठना-बैठना, बोलना सब सिखाते हैं। यह तभी सम्भव हो पाता है जब माता-पिता से यह सब ज्ञान बच्चे में संक्रमित होता रहता है। यही कारण कि बच्चा उसी भाषा को बोलता है जो उसके माता-पिता बोलते हैं उसके घर वाले बोलते हैं।

यहाँ अति संक्षेप में यह निवेदन और कर दें कि मनुष्य योनि और मानवेतर योनियों में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि मानवेतर योनियों का स्वाभाविक ज्ञान जो उन्हें जन्म के साथ प्राप्त होता है वह इतना अवश्य होता है कि वह अपने जीवन की सारी समस्याओं को सुलझा सकें परन्तु जो यह योग्यता उन्हें जन्म से प्राप्त हुई है उसमें वे विशेष बढ़ोतरी नहीं कर सकते, यह उनकी सीमा है। जबकि मनुष्य को जो स्वाभाविक ज्ञान जन्म से मिलता है वह अत्यन्त सीमित होता है और इसी कारण उस सीमित स्वाभाविक ज्ञान के बल पर वह जीवनयापन नहीं कर सकता न ही विशेष विकास कर सकता है। उदाहरण के तौर पर मनुष्य के अलावा जितने भी प्राणी इस संसार में है सबको स्वाभाविक रूप से तैरने का ज्ञान दिया गया है अतः मरुस्थल में रहने वाले ऊँट को भी जिसने कभी पानी न देखा हो अगर गंगा अथवा यमुना के जल में अथवा समुद्र में डाल दिया जाए तो वह तैर करके निकल जाएगा परन्तु दूसरी ओर एक व्यक्ति जो तैराकी का विश्व विजेता है उसका बच्चा जब तक तैराकी सीख न ले तब तक तैराक नहीं बन सकता। यही स्वाभाविक और नैमित्तिक ज्ञान का अन्तर है। पशु-पक्षियों का कार्य स्वाभाविक ज्ञान से चल जाता है जितना उन्हें सृष्टि का निर्माता देता है, परन्तु मनुष्य को नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता है जिसके बिना

वह कोई भी विकास नहीं कर सकता, हाँ इस ज्ञान के बल पर असीमित उन्नति अवश्य कर सकता है परन्तु प्रारम्भ में बीजरूप में ही सही उसे यह ज्ञान मिलना आवश्यक है। वह बिना सीखे बया के बनाए हुए घोसले को भी नहीं बना सकता अपने मकान को बनाना तो बहुत दूर की बात है जिसके लिए उसे इंजीनियरिंग की पढ़ाई करनी पड़ती है। तो इस विषय में अब बहुत ज्यादा ना लिखकर के आगे बढ़ने के पूर्व यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य को नैमित्तिक ज्ञान आवश्यक है। स्वाभाविक ज्ञान के सहारे मानवेतर प्राणी जीवनयापन कर सकते हैं और करते ही हैं परन्तु मनुष्य केवल स्वाभाविक ज्ञान के सहारे नहीं चल सकता। महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखते हैं-

'वैसे ही जो स्वाभाविक ज्ञान है सो वेद और विद्वान् की शिक्षा के ग्रहण करने में साधनमात्र ही है तथा पशुओं के समान व्यवहार का भी साधन है, परन्तु वह स्वाभाविक ज्ञान धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष विद्या का साधन स्वतन्त्रता से कभी नहीं हो सकता।

नैमित्तिक ज्ञान के इस प्रश्न को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में भी उठाया है प्रश्न किया- 'वेद की ईश्वर से होने की आवश्यकता कुछ भी नहीं क्योंकि मनुष्य लोग क्रमशः ज्ञान बढ़ाते जाकर पश्चात् पुस्तक भी बना लेंगे' इसका उत्तर ऋषि ने दिया है- 'कभी नहीं बना सकते क्योंकि बिना कारण के कार्य का होना असम्भव है जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देखकर भी विद्वान् नहीं होते और जब उनको कोई शिक्षक मिल जाए तो विद्वान् हो जाते हैं और अब भी किसी से पढ़े बिना कोई भी विद्वान् नहीं होता इस प्रकार जो परमात्मा आदि सृष्टि के ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और वह अन्य को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान् ही रह जाते।

आगे ऋषि लिखते हैं कि इसी से परमात्मा से सृष्टि की आदि में विद्याशिक्षा की प्राप्ति से उत्तर-उत्तर काल में विद्वान् होते आए। अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि हर पीढ़ी अपनी पूर्व पीढ़ी से नैमित्तिक ज्ञान सहजता से प्राप्त कर लेती है और उसमें उन्नति भी कर लेती है, परन्तु प्रथम पीढ़ी जब उत्पन्न हुई तो उसे ज्ञान कहाँ से मिला? वैदिक दर्शन में इसका उत्तर बिल्कुल स्पष्ट है कि यह ज्ञान माताओं की माता, पिताओं के पिता, गुरुओं के गुरु परमपिता परमात्मा ने दिया। अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा इन ४ ऋषियों की आत्मा में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद इन चारों वेदों का प्रकाश हुआ।

इन वेदों में मनुष्यमात्र के लिए जितना ज्ञान आवश्यक है वह बीजरूप में उपस्थित है, जिसे आने वाले ऋषियों ने अथवा वैज्ञानिकों ने साक्षात्कार कर अभूतपूर्व वृद्धि को प्राप्त किया।

इस सबके प्रमाण हेतु यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के आठवें मन्त्र को प्रस्तुत करते हैं-

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

हे मनुष्यो! जो अनन्त शक्तियुक्त, अजन्मा, निरन्तर, सदा मुक्त, न्यायकारी, निर्मल, सर्वज्ञ, सबका साक्षी, नियन्ता, अनादिस्वरूप ब्रह्म कल्प के आरम्भ में जीवों को अपने कहे वेदों से शब्द, अर्थ और उनके सम्बन्ध को जनानेवाली विद्या का उपदेश न करे तो कोई विद्वान् न होवे और न धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के फलों के भोगने को समर्थ हो, इसलिये इसी ब्रह्म की सदैव उपासना करो। (महर्षि दयानन्द भाष्य)

मन्त्र स्पष्ट कह रहा है कि परमपिता परमात्मा वेद द्वारा ज्ञान आदि सृष्टि में उत्पन्न ऋषियों को देता है। वे फिर अन्यों को पढ़ाते हैं इस प्रकार पीढ़ियों में ज्ञान का संचरण होता जाता है। यह भी ध्यातव्य है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। यही मन्त्र में कहा है-

बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद् दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ - ऋग्वेद २/२३/१५

मनुष्यों को चाहिये कि जो-जो ईश्वर ने वेद द्वारा सत्य का प्रकाश किया, वह-वह सब प्रकाश करें और जो-जो स्वार्थ चाहें, वह-वह सबके लिये चाहें। अतः संक्षेप में कहें तो सृष्टि के प्रारम्भ में जब मनुष्यों को उत्पन्न किया गया तभी परमेश्वर ने उन्हें

सृष्टि रचना, सृष्टि के पदार्थों का ज्ञान तथा उनके सदुपयोग से मानवोन्नति हेतु वस्तुओं का निर्माण, आपस में व्यवहार के सूत्र, स्वाभाविक रूप से बनने वाले परिवार, समाज तथा राष्ट्र की उन्नति के सूत्र, अभ्युदय और निःश्रेयस हेतु समस्त विधि और निषेध बीजरूप में दिया। यही वह नैमित्तिक ज्ञान है जिसके आधार पर मनुष्य उन्नति करता है।

यहाँ हम यह भी लिख दें तो उचित होगा कि वेद में समस्त विद्याएँ हैं। कुछ लोग दावा करते हैं कि मनुष्य को कृषि का ज्ञान काफी बाद में हुआ। अनेक मन्त्रों में से हम केवल एक मन्त्र दे रहे हैं जिसमें जौ एवं ऊखल की चर्चा है। कृषि ज्ञान अगर वेद से नहीं आया तो ये मन्त्र यहाँ क्या कर रहे हैं?

यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह उलूखलक युज्यसे।
इह द्युमत्तमं वद जयतामिव दुन्दुभिः।। – ऋग्वेद १/२८/५

भावार्थ – इस मन्त्र में उपमालंकार है। सब घरों में उलूखल और मुसल को स्थापन करना चाहिये, जैसे शत्रुओं के जीतने वाले शूरवीर मनुष्य अपने नगाड़ों को बजा कर युद्ध करते हैं, वैसे ही रस चाहनेवाले मनुष्यों को उलूखल में यव आदि औषधियों को डालकर मुसल से कूटकर भूसा आदि दूर करके सार-सार लेना चाहिये।

यह तो बात रही वेद की अब हम इस्लाम की बात करते हैं–

इस्लाम भी सृष्टि को एक कर्त्ता द्वारा निर्मित मानता है। वस्तुतः इस्लाम में अनेक विन्दु बायबिल से यथावत अथवा किंचित परिवर्तन के साथ ले लिए हैं उसी के अनुसार सर्वप्रथम आदम को बनाया गया तदुपरान्त हव्वा को आदम की एक पसली से परन्तु यहाँ अदन का बाग जन्नत का बाग है तथा सातवें आसमान पर है.. पर जहाँ तक ज्ञान देने की बात है यहाँ ज्ञान के फल तथा उससे सम्बन्धित सभी सामग्री यहाँ तक कि आदम और हव्वा को अल्लाह ने धरती पर अलग-अलग जगह भेज दिया, यह सब वर्णन है। कुरआन में कई स्थलों पर अस्पष्ट रूप से यह बात मिल जाती है कि अल्लाह ने आदम को ज्ञान दिया। इस्लाम के जानकारों के अनुसार आदम को जब बहिष्कृत किया तो वह जन्नत से कई वस्तुएँ लेकर निकला। दरख्तों से निकलने वाली गोंद, लोहे की सिल, लोहे का हथौड़ा और लोहे का चिमटा। जब वह नीचे उतरा तो उसने लोहा देखा उसको गर्म कर उसने छुरी बनायी। (अर्थात् आदम को अग्नि तथा उसका प्रयोग भी आता था)। जब आदम को भूख लगी तो उसने अल्लाह से अपनी बात कही तब अल्लाह ने जिबराइल के साथ कुछ गेंहूँ भेजे। जिबरायल ने उनमें से सात दाने आदम को दिए तथा कृषि की शिक्षा देते हुए उससे कहा कि इन दानों को जमीन में डाल दे। जब थोड़ी देर में फसल उगी तो जिबरायल आदम को गेंहू साफ करने, पीसने से लेकर रोटी बनाने तक सिखा दिया। यह भी आता है कि आदम अनेक भाषाएँ जानता था कैसे? मालूम नहीं।

जो भी हो कितनी भी अस्वाभाविक उपरोक्त कहानी हो यह तो स्पष्ट है कि प्रथम पीढ़ी अर्थात् आदम को ज्ञान अल्लाह द्वारा अथवा उसके फरिश्ते द्वारा दिया गया। कृषि ज्ञान और अग्नि प्रयोग भी उसे ज्ञात था।

वस्तुतः यदि हम अब्राहमिक मजहबों पर विचार करें जिसमें इस्लाम और ईसाई सहित संसार के तीन अरब से अधिक लोग आते हैं उनमें एक ज्ञान के पेड़ की चर्चा आती है। आदम और हव्वा अर्थात् प्रथम पुरुष और स्त्री अदन के बाग अथवा जन्नत में निर्वस्त्र घूमते थे क्योंकि उन्हें ज्ञान प्राप्त नहीं था फिर कैसे सर्प अथवा शैतान ने उन्हें ईश्वराज्ञा भंग करने हेतु उकसाया और किस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया यह कहानी इस प्रकार है–

परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि वे अदन बगीचे के सभी पेड़ों से फल तोड़कर खा सकते हैं। लेकिन परमेश्वर ने उन्हें एक पेड़ का फल खाने से मना किया था। परमेश्वर ने यह भी कहा कि अगर वे उस पेड़ का फल खाएँगे, तो वे मर जाएँगे। एक दिन हव्वा बगीचे में अकेली थी। तभी एक साँप आकर उससे बात करने लगा।

उस सर्प ने हव्वा से कहा कि अगर वह उस पेड़ का फल खा ले, जिसके लिए परमेश्वर ने मना किया है, तो वह परमेश्वर के जितनी अक्लमन्द बन जाएगी। हव्वा ने उसकी बात सच मान ली और वह फल खा लिया। फिर उसने वह फल आदम को दिया और आदम ने भी वह फल खा लिया। उन दोनों ने परमेश्वर का कहा नहीं माना। इसलिए उन्हें अपने घर से, यानी उस खूबसूरत अदन बगीचे से बाहर निकाल दिया गया। उत्पत्ति पर्व२ में यह इस प्रकार है–

१. स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं।

२. पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।

३. तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे।
४. वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।
५. सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।
६. तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उन को मालूम हुआ कि वे नंगे हैं सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़-जोड़ कर लंगोट बना लिये।
७. तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठण्डे समय बाटिका में फिरता था उसका शब्द उन को सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी बाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए।
८. तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा, तू कहाँ है?
९. उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुन कर डर गया क्योंकि मैं नंगा था इसलिये छिप गया।
१०. उसने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैंने तुझे बर्जा था, क्या तूने उसका फल खाया है?
११. आदम ने कहा जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।
१२. तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया।
१३. तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प, आदम एवं हव्वा को श्रापित किया।
१४. फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हममें से एक के समान हो गया है, इसलिये अब ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ा कर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे।
१५. तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था।
१६. इसलिये आदम को उसने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की बाटिका के पूर्व की ओर करुबों को, और चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।

यहाँ यह बात उभरकर आती है कि परमेश्वर ने ज्ञान का फल बनाया तो था परन्तु किसके लिए? क्योंकि परमेश्वर का कोई कार्य निरर्थक नहीं होता। आज से लगभग १५० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उक्त विवरण पर जो प्रश्न उठाये थे उनका उत्तर आजतक कोई नहीं दे पाया है। वे प्रश्न आजतक अनुत्तरित हैं पाठकों तथा अबराहमिक मजहब के अनुयायियों के विचार हेतु यहाँ प्रस्तुत हैं-

'जो ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ होता तो इस धूर्त सर्प अर्थात् शैतान को क्यों बनाता? और जो बनाया तो वही ईश्वर अपराध का भागी है क्योंकि जो वह उसको दुष्ट न बनाता तो वह दुष्टता क्यों करता? और वह पूर्वजन्म नहीं मानता तो विना अपराध उसको पापी क्यों बनाया? और सच पूछो तो वह सर्प नहीं था किन्तु मनुष्य था। क्योंकि जो मनुष्य न होता तो मनुष्य की भाषा क्योंकर बोल सकता? (बच्चों के लिए बाइबिल की कहानी में अब यही लिखा मिलता है कि वह सर्प नहीं कोई मनुष्य था) और जो आप झूठा और दूसरे को झूठ में चलावे उसको शैतान कहना चाहिये सो यहाँ शैतान सत्यवादी और इससे उसने उस स्त्री को नहीं बहकाया किन्तु सच कहा और ईश्वर ने आदम और हव्वा से झूठ कहा कि इसके खाने से तुम मर जाओगे। जब वह पेड़ ज्ञानदाता और अमर करने वाला था तो उसके फल खाने से क्यों वर्जा? और जो वर्जा तो वह ईश्वर झूठा और बहकाने वाला ठहरा। क्योंकि उस वृक्ष के फल मनुष्यों को ज्ञान और सुखकारक थे। अज्ञान और मृत्युकारक नहीं। जब ईश्वर ने फल खाने से वर्जा तो उस वृक्ष की उत्पत्ति किसलिये की थी? जो अपने लिए की तो क्या आप अज्ञानी और मृत्यु धर्मवाला था? और दूसरों के लिये बनाया तो फल खाने में अपराध कुछ भी न हुआ। और आजकल कोई भी वृक्ष ज्ञानकारक और मृत्यु निवारक देखने में नहीं आता। क्या ईश्वर ने उसका बीज भी नष्ट कर दिया? ऐसी बातों से मनुष्य छली कपटी होता है तो ईश्वर वैसा

क्यों नहीं हुआ? क्योंकि जो कोई दूसरे से छल-कपट करेगा वह छली-कपटी क्यों न होगा? और जो इन तीनों को शाप दिया वह विना अपराध से है। पुनः वह ईश्वर अन्यायकारी भी हुआ और यह शाप ईश्वर को होना चाहिये क्योंकि वह झूठ बोला और उनको बहकाया।..... जब आदम का कुछ भी अपराध सिद्ध नहीं होता तो ईसाई लोग सब मनुष्यों को आदम के अपराध से सन्तान होने पर अपराधी क्यों कहते हैं? भला ऐसा पुस्तक और ऐसा ईश्वर कभी बुद्धिमानों के मानने योग्य हो सकता है? यहाँ एक बात और विचारणीय है कि जब आदम ने ज्ञान का फल खाया उससे पूर्व यहोवा ने आदम को समस्त जन्तुओं के नाम रखने को कहा।

१७. और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखें, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है और जिस-जिस जीवित प्राणी का जो-जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया।

१८. सो आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे।..

– उत्पत्ति पर्व अध्याय १

पाठकगण विचार करें नाम बिना भाषा-ज्ञान के नहीं रखे जा सकते। नाम सार्थक हों इसके लिए ज्ञान भी आवश्यक है। इसका अर्थ यह हुआ कि आदम को ज्ञान का फल खाने से पूर्व भाषा व ज्ञान प्राप्त था। वह उसे किससे और किस विधि से प्राप्त हुआ है, यह बायबल में नहीं है जबकि वेद में सब स्पष्ट वर्णन है। इस प्रकार बायबल में ज्ञान के पेड़ की सारी कहानी का कोई महत्त्व नहीं।

आदम की नामकरण की योग्यता देखिये। उसने अपने दो बेटों का नाम केन तथा अबेल (हाबिल) रखा। केन का अर्थ है भाला तथा अबेल का अर्थ श्वास अथवा वाष्प है। दोनों ही नामकरण उचित प्रतीत नहीं होते। वस्तुतः आदि मनुष्य के पूर्व जो सत्ताएँ संसार में थीं उनके नाम ईश्वर द्वारा ही दिए जा सकते हैं जितने भी नाम हैं वे वेद से ही लिए गए हैं। आप देखें वेद में घोड़े, बकरी, गौ आदि के न केवल नाम हैं बल्कि उनके उपयोग आदि के बारे में भी निर्देश हैं, अर्थात् परमपिता परमात्मा ने न केवल वृक्षों, कृषि-पदार्थों, जन्तुओं को बनाया, उनका नामकरण किया बल्कि संकेत मात्र से इनके उपयोग तथा इनकी देखरेख के निर्देश भी दिए हैं। ईश्वरीय ज्ञान में यह स्वाभाविक है। निम्न वेद मंत्र को देखें-

यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति।
यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा ता तेऽअपि देवेष्वस्तु।। – यजुर्वेद २५/३२

मनुष्यों को ऐसी घुड़शाल में घोड़े बाँधने चाहियें, जहाँ इनका रुधिर आदि मांछि आदि न पीवें।

स्थिरौ गावौ भवतां वीळुरक्षो मेषा वि वर्हि मा युगं वि शारि।
इन्द्रः पातल्ये ददतां शरीतोररिष्टनेमे अभि नः सचस्व।। – ऋग्वेद ३/५३/१७

मनुष्यों को चाहिये कि बड़े उपकार करने वाले गौ आदि पशुओं का कभी नाश नहीं करें।

इममूर्णायुं वरुणस्य नाभिं त्वचं पशूनां द्विपदां चतुष्पदाम्।
त्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जनित्रमग्ने मा हिꣳसीः परमे व्योमन्।
उष्ट्रमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद।
उष्ट्रं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु।। – यजुर्वेद १३/५०

हे राजन्! जिन भेड़ आदि के रोम और त्वचा मनुष्यों के सुख के लिये होती हैं और जो ऊँट भार उठाते हुए मनुष्यों को सुख देते हैं, उनको जो दुष्टजन मारना चाहें, उनको संसार के दुःखदायी समझो और उनको अच्छे प्रकार दण्ड देना चाहिये।

अग्नये कुटरूनालभते वनस्पतिभ्यऽउलूकानग्नीषोमाभ्यां
चाषानश्विभ्यां मयूरान् मित्रावरुणाभ्यां कपोतान्।। – यजुर्वेद २४/२३

इस मन्त्र में मुर्गों, उल्लुओं, मोर, नीलकण्ठ, कबूतरों का वर्णन है।

ऊपर हमने तुलनात्मक विवरण अति संक्षेप में देने का प्रयास किया है जिससे स्पष्ट है कि ईश्वरीय ज्ञान की श्रेणी में केवल वेदज्ञान ही आ सकता है। तथा इस ज्ञान को सर्वप्रथम चार ऋषियों को दिया गया। यह सब तर्क पर खरा उतरता है बायबल तथा कुरआन आदि का तत्सम्बन्धी विवरण नहीं। और वर्जित फल क्यों था यह प्रश्न आज भी बना हुआ है।

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

बलिदान दिवस पर विशेष

योद्धा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि आन्दोलन के महारथी, दलितों के उद्धारक, शिक्षा-विद् स्वामी श्रद्धानन्द का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारतवर्ष मिटने के कगार पर खड़ा था। वह दिन था २२ फरवरी सन् १८५६ ई.। उसके एक वर्ष पश्चात् ही भारतीय स्वाधीनता का प्रथम संग्राम प्रारम्भ हुआ। इस संग्राम में हिन्दुस्तान के आखिरी बादशाह बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में हिन्दू मुसलमानों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर अंग्रेजों के खिलाफ आजादी का संघर्ष लड़ा। लेकिन उसके बाद अंग्रेजों ने दोनों की ताकत का अनुभव कर हिन्दू और मुसलमानों को एक दूसरे से अलग रखने की नीति पर जोर दिया। ई. सं. १८७५ आते-आते हिन्दुओं एवं मुसलमानों में दरार पड़ गई। यह दरार सन् १९२० ई. के आते-आते चौड़ी होती चली गई। अंग्रेजों ने भारतवर्ष में गरीब आदिवासी दलितों को क्रिश्चियन बनाने के उद्देश्य से धर्म परिवर्तन की छूट दे दी और उसके लिए कानून भी बनाया। इंग्लैण्ड से पादरियों को यह कार्यक्रम सफल बनाने के लिए आमंत्रित भी किया जाने लगा। ई. सन् १९२० में महात्मा गाँधी राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगे। स्वामी श्रद्धानन्द जी भी कांग्रेस के उच्च नेताओं में गिने जाते थे। गाँधी जी ने हरिजन उद्धार के नाम से दलितों को आगे लाने का कार्य आरम्भ किया। सन् १९१९ में अमृतसर कांग्रेस के स्वामी जी स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए। राष्ट्रीय कांग्रेस के प्लेटफार्म से वे पद दलित हिन्दुओं के हितों की आवाज उठाने लगे। इस अधिवेशन में उन्होंने दलितोद्धार की बात उठाई, लेकिन महात्मा गाँधी और कांग्रेस कार्यकारिणी ने उनकी बात पर कोई ध्यान नही दिया। तब स्वामी जी ने सन् १९१९ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से 'दलितोद्धार सभा' की स्थापना की। इस सभा के द्वारा स्वामी जी ने हजारों दलितों को आर्यसमाज में लाकर उन्हें सम्मान का स्थान दिया। अस्पृश्यों को दलित यह नाम स्वामी श्रद्धानन्द ने ही भारत में सर्वप्रथम दिया जिसे बाद में डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने स्वीकार कर उनके अधिकारों के लिए आन्दोलन चलाया। महात्मा गाँधी द्वारा प्रदत्त हरिजन नाम को दलितों ने स्वतंत्रता से पूर्व ही नकार दिया था। महात्मा गाँधी का शुद्धि आन्दोलन के लिए भी तीव्र विरोध था। आश्चर्य तो तब होता है जब, क्रिश्चियन मिश्नरियों के धर्म परिवर्तन के कार्य का गाँधी जी विरोध करते लेकिन मुस्लिमों द्वारा चलाई गई तबलीग (धर्म परिवर्तन) को, यह उनका अधिकार है कहकर समर्थन देते। स्वामी जी को उनकी यह दोहरी नीति सामाजिक समरसता में बाधक लगी। मालाबार में मोपलों द्वारा हिन्दुओं की हत्या को महात्मा गाँधी द्वारा 'यह उनके धार्मिक अधिकारों के अनुरूप कार्य है।' समर्थन देना स्वामी जी को उचित नहीं लगा। इस प्रकार स्वामी जी सामाजिक, धार्मिक भेदभाव की नीतियों को देखते हुए उनसे दूर होते चले गए।

स्वामी श्रद्धानन्द जी जिस किसी भी कार्यक्षेत्र में उतरे उन्होंने उस कार्य में दलित, अस्पृश्य, पिछड़ा, आदिवासी, गरीब को ही केन्द्रबिन्दु में रखकर कार्य किया। उनके जीवन का कार्य इन्हीं वर्गों के इर्द-गिर्द घूमता हुआ हमें दिखाई देता है। सन् १८९२ में जब वे आर्य प्रतिनधि सभा पंजाब के प्रधान पद पर आसीन हुए तब वे पंडित लेखराम आर्य के साथ लगभग ५ वर्षों तक मुस्लिम, दलित सिखों के शुद्धि कार्य में लगे रहे।

२० मई सन् १९२४ को मद्रास के 'गोखले हॉल' में स्वामी जी को भाषण देना था उन्होंने कहा- यदि आपने अस्पृश्य कहे जाने वाली भाईयों के उद्धार की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया तो मैं आपको सचेत करता हूँ, कि वह दिन दूर नहीं जब आपके दलित भाई जिन्हें आप पंचअंग कहते हैं, आपसे सब तरह का सम्बन्ध तोड़ देंगे या तो सब के सब दूसरे सम्प्रदायों में चले जायेंगे, अथवा अपनी जाति अलग बना लेंगे। स्वामी श्रद्धानन्द की यह भविष्यवाणी ३२ वर्ष बाद सत्य सिद्ध हुई, जब सन् १९५६ में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने लाखों दलितों के साथ नागपुर (महाराष्ट्र) में बौद्धधर्म स्वीकार कर लिया। जून १९२४ में ही स्वामी जी ने अहमदाबाद में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन के अवसर पर महात्मा गाँधी को पत्र लिखकर निवेदन किया था- 'कृपा करके अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के हिन्दू सभासदों को जो नौकर रख सकते हैं, कहा जाए कि वे अपनी व्यक्तिगत सेवाओं के लिए जो नौकर रखें, उनमें एक नौकर अवश्य अछूत कहलाने वाले वर्गों में से ही हो।'

एक बार स्वामी श्रद्धानन्द जी ने रायसाहब शारदाजी से कहा था- 'कि अछूतोद्धार, शुद्धि और संगठन के बिना आर्यजाति जीवित नहीं रह सकती।' शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी जी ने अविस्मरणीय कार्य किया है। उनकी हृदय से इच्छा थी कि 'मैंने जितने भी गुरुकुल स्थापित किये हैं, उनमें शूद्रातिशूद्र से लेकर ब्राह्मण वर्ग के बालक पढ़ सकें। इसलिए आज भी गुरुकुलों में जन्मगत जाति का निषेध किया जाता है, जिससे उन विद्यार्थियों को आत्मग्लानि की अनुभूति न हो। उन्होंने युवकों को आधुनिकता के साथ प्राचीन शिक्षा भी प्राप्त हो, इसके लिए मुलतान, कुरूक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, रोहतक, रायकोट, लुधियाना, सूपा (गुजरात) आदि स्थानों में गुरुकुलों की स्थापना की।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना

हिन्दुओं की अनेक जातियों को नवाब फर्रुखसीयर तथा समकालीन मुस्लिम शासकों ने बलात् अथवा धोखे से मुसलमान बना लिया था। उसके बाद सन् १९२२ तक इन राजपूत भाईयों को किसी का संरक्षण प्राप्त नहीं हुआ। अतः इन हिन्दू भाइयों को बहुत सारे कष्ट उठाने पड़े। मूल राजपूतों ने उन्हें अपनी बिरादरी में लेने से इंकार कर दिया और उनके साथ हुक्का पानी पर भी रोक लगा दी। सन् ३१ दिसम्बर १९२२ को शाहपुराधीश सर नाहरसिंह की अध्यक्षता में 'क्षत्रिय महासभा' का अधिवेशन हुआ। उस अधिवेशन के चार मास पूर्व अर्थात् ३० अगस्त १९२२ ई. को ऑनरेबल सर महाराजा रामपालसिंह जी की अध्यक्षता में उपरोक्त राजपूत भाइयों ने राजाधिराज श्री नाहरसिंह जी के. सी. आई. ई. शाहपुराधीश को निम्न प्रस्ताव दिया-

'शाही जमाने में जो राजपूत भाई हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति से अलग हो गए हैं, अथवा अलग कर दिए गए थे, अब वे पुनः अपने धर्म में आना चाहते हैं। उनको पुनः शुद्ध करके राजपूत हिन्दू बिरादरी में शामिल कर लिया जावे।' इसके बाद ४.५ लाख मुसलमान राजपूतों ने बाकायदा प्रार्थना-पत्र दिया था। शाहपुरा के राजाधिराज सर नाहरसिंह जी के.सी. आई.ई. की अध्यक्षता में यह प्रस्ताव औपचारिक दृष्ट्या पास कर लिया गया, लेकिन इस प्रस्ताव का सिर्फ कागजी मूल्य के अतिरिक्त कोई महत्त्व न था। कुछ दिन बाद 'हिन्दू' साप्ताहिक में एक समाचार पढ़ने को मिला कि आगरा और आसपास के गाँव के ४.५ लाख मुसलमान राजपूतों ने हिन्दू धर्म में आने के लिए प्रस्ताव दिया है, और 'क्षत्रियसभा' ने उसे स्वीकृत भी कर लिया है। इस घटना के समाचार पत्र में आने के पश्चात् आगरा से लेकर दिल्ली तक के मुल्ला मौलवियों में हड़कम्प मच गया। इस शुद्धि कार्यक्रम का विरोध करने के लिए लाहौर के पट्टीगाँव में मुसलमानों की सभा हुई। इस सभा में देवबन्द के मौलवियों ने इस अभियान के विरुद्ध जहरीले भाषण दिये। उन्होंने कहा- 'यदि इस प्रकार की शुद्धि का कार्यक्रम किया गया तो भारत के मुलसमान हिन्दू-मुस्लिम एकता को चीरफाड़ कर रख देंगे।' यह धमकी अमृतसर के उर्दू दैनिक 'वकील' पत्र में छपी थी। इस रिपोर्ट के छापने के बाद मुस्लिम जगत् में अफरा-तफरी मच गयी। यदि इतनी बड़ी तादाद में मुस्लिमों का धर्मान्तरण किया जाता है तो भारतवर्ष में मुसलमानों का क्या वजूद रहेगा? इसके चार सप्ताह बाद सैंकड़ों मुल्ला मौलवी, नेता आगरा, मथुरा और भरतपुर स्थित मलकानों के गाँवों में घुसकर राजपूतों को डराने-धमकाने और फुसलाने लग गये। जनवरी और फरवरी सन् १९२३ में वे दो माह तक वहीं डेरा जमाकर इस्लाम की खूबियाँ बखान करने लगे।

इस डरावने और लुभावने कार्यक्रम से उन पर उलटा प्रभाव पड़ा जिससे हिन्दू समाज हड़बड़ाकर जाग उठा। आधे दर्जन

से अधिक उस इलाके में गये और मुस्लिम राजपूतों पर क्या गुजर रही है उसका जायजा लिखा उसकी रिपोर्ट जब हिन्दू नेताओं को मिली तो आर्य समाज के अतिरिक्त सनातन, सिक्ख, जैन और राजपूत वर्ग के लगभग १००-१२५ प्रतिनिधियों को १३ फरवरी ई. सन् १९२३ को एक अधिवेशन में बुलाया गया। इस अधिवेशन में स्वामी माधवसिंह, पंडित देवप्रकाश जी तथा महात्मा हंसराज जी को विशेष रूप से बुलाया गया। अधिवेशन में भारतवर्ष के

गणमान्य हिन्दू नेताओं की उपस्थिति में निश्चय किया गया कि, संयुक्त प्रान्त के लाखों मुस्लिम राजपूतों को मुस्लिम नेता- मौलवी हिन्दू धर्म में आने से रोक रहे हैं, उनको फिर से हिन्दू धर्म में दीक्षित किया जाय, साथ ही मलकाने राजपूतों के अतिरिक्त मन जाट और गुर्जर तथा नौ मुस्लिम ब्राह्मण और बनिया आदि जमातों को भी हिन्दू धर्मी बनाया जाये। इस कार्यक्रम को सूचक रूप में निरन्तर चलाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्रधान, महात्मा हंसराज जी को उपप्रधान तथा महामंत्री कुंवर माधव सिंह, मंत्री पंडित देवप्रकाश आर्य को नियुक्त किया गया। इन पदाधिकारियों के नेतृत्व में १३ फरवरी सन् १९२३ को 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' की स्थापना की गई। इस सभा की स्थापना से पूरे हिन्दू समाज में एक क्रान्ति सी आ गई। काशी के बड़े-बड़े महामहोपाध्याय प्रारम्भ में शुद्धि के विरुद्ध थे बाद में वे भी हिन्दू धर्म एवं आर्य समाज और अन्य मतों के नेताओं के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर चलने को तैयार हो गए। सभी नेताओं के सहयोग से दिसम्बर के अन्त तक लगभग २.५ लाख हिन्दुओं की शुद्धि इस सभा द्वारा की गई।

साभार- शुद्धि समाचार (सितम्बर २०२२)

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (द्वादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ ज	१	■	२	ढि २	२	■	३ सां	३	■
४	४ भ	४	ना ४	४	■	५	व ५	पु ५	५
६ उ	६	ग ६		७ न	७	८ पा	८	८	थ ८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जैनियों के श्वेताम्बर को क्या कहते हैं?
२. जैनियों में जो पाषाणादि मूर्ति को नहीं मानते और भोजन, स्नान को छोड़ सर्वदा मुख पर पट्टी बांधे रहते हैं, उनको क्या कहते हैं?
३. 'पंचावयवजोगात्सुखसंवित्तिः' यह किस शास्त्र का सूक्त है?
४. जैनियों के ग्रन्थ रत्नसार के अनुसार चार सौ धनुष परिमाण शरीर और साठ लाख पूर्व वर्ष का आयु किसकी थी?
५. जैनी चौहदवें राज्य की शिखा पर सर्वार्थसिद्धि विमान की ध्वजा से ऊपर थोड़े दूर पर सिद्धशिला तथा दिव्य आकाश को क्या कहते हैं?
६. जैनियों के एक दमसार साधु ने क्रोधित होकर किस प्रकार के सूत्र पढ़कर एक शहर में आग लगा दी?
७. रत्नसार के अनुसार नौ हाथ का शरीर और सौ वर्ष की आयु किनकी थी?

''विस्तृत नियम पृष्ठ १७ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जनवरी २०२३

बाल मन पर पड़ता प्रभाव

गाँधी जी की जीवनी पढ़ रहा था और पढ़ने पर पाया कि मोहनदास नामक बालक बचपन में सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र नामक चल-चित्र देखने पर पूरे जीवन सत्य बोलने का प्रण कर लेता है और सत्य के मार्ग पर आजीवन चल पड़ता है। फिर विचार आता है कि आजकल के कोमल मन वाले बच्चों पर स्मार्टफोन के हिंसक गेमों, टीवी चैनल के अनेकों धारावाहिकों का उनके बचपन पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

आज के दौर में बच्चों की जीवन शैली को देखता हूँ तो पता चलता है कि उनका अधिकांश बचपन स्मार्टफोन और टीवी पर व्यतीत होता है। इसके जिम्मेदार ईश्वर रूपी नन्हे बालक ही नहीं, अपितु उनके अभिभावक भी हैं, जो कामकाजी होने पर भी संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार में विश्वास रखते हैं और बच्चों को मनोरंजन के लिए मोबाइल और टीवी के सामने बैठा देते हैं और खुद लग जाते हैं अपने दूसरे कामों में। बच्चा भी एकल परिवार में नाना-नानी और दादा-दादी के कहानी, प्यार और संस्कार की बात तो दूर माँ की लोरी से भी वंचित हो बन्द कमरे में मोबाइल और टीवी के साथ अपना बचपन गुजार देता है।

अभिभावक सोचते हैं कि जब तक बच्चा स्मार्ट फोन, टीवी पर फंसा है तब तक जरूरी काम निपटा लें, लेकिन उन्हें इसका तनिक भी आभास नहीं होता कि उनके कामों के साथ-साथ उनके बच्चों का नाजुक बचपन भी निपट रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार १ से ५ साल के बच्चों में शारीरिक विकास तेजी से होता है और मोबाइल टीवी पर समय बिताने के कारण वो बाकी अलग-अलग खेलों से दूर होते जाते हैं जिससे उनके शरीर का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता।

दिल्ली स्थित, ऑल इण्डिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (एम्स) द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, भारत में ५-१५ वर्ष की आयु वर्ग के १७ प्रतिशत बच्चे मायोपिया (निकट दृष्टि दोष) से पीड़ित हैं। आमतौर पर मोबाइल, लैपटॉप पर ज्यादा समय बिताने, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स को उपयोग करते समय उनसे बराबर दूरी ना होने, प्राकृतिक रोशनी में कम समय बिताने से मायोपिया से ग्रसित होने की समस्या बढ़ती है। क्योंकि आज के परिवेश में लोगों का सामाजिक दायरा भी कम होता जा रहा है। लोग किसी से मेल-मिलाप नापसन्द करते हुए बन्द कमरों में ज्यादा समय व्यतीत कर रहे हैं जिससे अभिभावक के साथ उनका बालपन भी प्राकृतिक रोशनी से वंचित हो बन्द कमरों की कृत्रिम रोशनी में जीवन बिताने को मजबूर है। दूसरा एक ही पोजीशन (स्थिति) में सिर झुकाये मोबाइल पर गेम खेलने के कारण बच्चों में सर्वाइकल (गर्दन में दर्द) होने की प्रबल सम्भावना होती है।

और तो और आज के बच्चों का बचपन देखता हूँ और फिर अपने बचपन के बारे में सोचता हूँ, जहाँ हमारा बचपन विलुप्त होने के कगार पर पहुँच चुके खेलों कबड्डी, खो-खो, लुका-छिपी, ऊँची कूद जैसे के साथ-साथ क्रिकेट, फुटबाल, बालीबाल के साथ बीता, वहीं आज के बच्चों का बचपन बन्द

कमरों में टीवी और स्मार्टफोन पर बीत रहा जिससे उनका

शारीरिक रूप से पूर्णतया विकास ना होने के साथ-साथ उनमें सामाजिकता की कमी भी आती है। बाहर निकल कर बच्चे जब तक ना खेलेंगे, तब तक अपने परिवेश में बाकी बच्चों से दोस्ती भी ना कर पाएँगे और वो बचपन से ही संकुचित जीवन के आदी हो जायेंगे।

यह ठीक है कि मोबाइल, टीवी पर काफी ऐसे ज्ञानवर्धक कार्यक्रम हैं जो बच्चों के विकास के लिए अति-आवश्यक हैं इन पर ऐतराज नहीं किया जा सकता लेकिन उपयुक्त बातों का ध्यान रखते हुए बच्चों के मोबाइल और टीवी के उपयोग का समय सीमित कर देना चाहिए।

अतः आजकल के अभिभावक से इतना कहना चाहूँगा कि आपके घर का बच्चा आपका ही बच्चा नहीं है अपितु राष्ट्र की धरोहर भी है, जो कल देश के भविष्य की दिशा का निर्धारण करेगा। इतिहास उठा कर देख लीजिए महात्मा गाँधी बचपन में भूत के डर के कारण अंधेरे में एक कदम नहीं बढ़ा पा रहे थे, इतने में बाहर खड़ी बूढ़ी दाई रम्भा ने उनकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा राम का नाम लो भूत तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा, फिर राम नाम का ऐसा चस्का लगा कि उनके मरते समय भी आखिरी शब्द 'हे राम' ही निकला। जब बाल्य मन इतना ग्राही होता है तो सोचिए आपका बच्चा जब देखेगा की नोबिता जिद्द करके डोरेमोन से

अपनी बात मनवा लेती है तो वो भी नोबिता की तरह जिद्दी बनेगा ना कि राम की तरह आज्ञाकारी।

- हरदासीपुर, चन्दवक, जौनपुर- २२२१२९ (उ. प्र.)
चलभाष- ८३६७७८२६५४, व्हाट्सअप - ८७९२२५७२६७

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

जैसे कि आप सब जानते हैं कि आर्यसमाज शब्द का शब्दार्थ है- श्रेष्ठों=अच्छों का संगठन जो वेदादि शास्त्रों में प्रतिपादित विचारों, मन्तव्यों, सिद्धान्तों के प्रचार के लिए बनाया गया है। जिसके द्वारा संसार में आर्यता का प्रसार हो और जिससे सभी सफल-सुखी हो सकें। इस सबके परिचय के लिए जहाँ महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि जैसे विशेष ग्रन्थ बनाये वहाँ आर्योद्देश्यरत्न माला, स्वमन्तव्या मन्तव्य प्रकाश सदृश लघुग्रन्थ भी प्रकाशित किये। इनमें वेदादि शास्त्रों के निचोड़ को सारगर्भित शब्दों द्वारा जीवन से जुड़ी सभी बातों का सम्पूर्ण परिचय (अतिसंक्षिप्त रूप में समाया) है। उदाहरण की दृष्टि से अध्यात्म के ईश्वर, जीव, प्रकृति, मोक्ष आदि, धर्म की दृष्टि से धर्म, स्वर्ग, तीर्थ, व्रत जैसे। यहाँ केवल ईश्वर पर ही विचार करते हैं।

'ईश्वर' शब्द का अर्थ है- स्वामी, मालिक, नियन्त्रक।

भगवान का सामान्य भाव है- अनेक तरह का ऐश्वर्य वाला। वेद आदि सभी शास्त्रों में संसार के उत्पादक, पालक, व्यवस्थापक आदि (गुण, कर्म के कर्त्ता) को ईश्वर, भगवान आदि नाम से स्मरण किया है। क्योंकि जिन भौतिक पदार्थों को हम प्रतिदिन अपने व्यवहार में लाते हैं, उनमें से अधिकतर ऐसे हैं, जिनको हमारे जैसे कारीगर बनाते हैं। हाँ, इनके जो लकड़ी, लोहा जैसे कच्चे माल हैं और जितने भी सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, धरती सदृश प्राकृतिक पदार्थ हैं, उनको हमारे जैसा कोई बनाता चलाता दिखाई नहीं देता। निःसन्देह उन पदार्थों को बनाता हुआ, कोई चाहे दिखाई न दे, पर इनकी कार्य प्रक्रिया, चालन व्यवस्था, परिवर्तन, विकार की स्थिति यह अनुमान करा देती है कि ये सब भी किसी कर्त्ता की कृति, रची हुई रचना अवश्य हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की विविध रचनाओं के साथ आर्यसमाज के पहले एवं दूसरे नियम में भी जहाँ ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने वाली दो युक्तियाँ दी हैं। वहाँ द्वितीय नियम में ईश्वर के स्वरूप, गुणों का परिचय दिया गया है। इनका अन्तिम शब्द है- सृष्टिकर्त्ता अर्थात् उत्पन्न होने वाले को करने, बनाने वाला। इस नियम के अन्तिम अंश (उसी की उपासना करनी चाहिए) में इस संसार से लाभ लेने वालों को सन्देश दिया है कि ईश्वर की कृतज्ञता (किये हुए उपकारों) को स्वीकार करते हुए उसकी उपासना (अर्थात् उससे जुड़ने, उसका अनुभव करने का यत्न) करना चाहिए। तभी ऐसा करने पर व्यक्ति में आत्मिक बल, सन्तोष, शान्ति उभरती है।

भक्ति- इसका सबसे सरल ढंग यह है कि प्रायः शौच आदि दैनिक आवश्यक कृत्यों से निपट कर 'ओ३म्' की गुंजार करें। इसकी सीधी प्रक्रिया यह है कि ईश्वर के अधिक से अधिक 'स्वरूप' के बोधक सर्वोत्तम नाम 'ओ३म्' को लम्बी सांस के साथ थोड़ा सा मुख खुला रखते हुए ओठों से दीर्घ श्वांस के साथ ओ३म् की गुंजार करें। इस गुंजार के साथ ही साथ मन में ओ३म् वाच्य ईश्वर के स्वरूप का चिन्तन, ध्यान करें। इस प्रकार एक गुंजार के पश्चात् थोड़ा रुककर पुनः ओ३म् की गुंजार करें। ओ३म् एक प्राकृतिक, स्वाभाविक ध्वनि है। अतः श्वास के साथ आप इसको जितना भी दीर्घ, लम्बा, गहरा करना चाहें सरलता से कर सकते हैं। इसीलिए इसको उद्गीथ प्राणायाम कह सकते हैं। तब ऐसी स्थिति में 'एक पन्थ दो काज' के अनुसार प्रभु भक्ति के साथ ही शरीर

की आरोग्यता, स्वस्थता, सुदृढ़ता का भी यह एक अचूक साधन बन जाता है।

उपासना को ही पूजा, भक्ति, अर्चना, वन्दना आदि भी कह दिया जाता है। उपासना की दृष्टि से यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि ईश्वर सर्वव्यापक के साथ नित्य भी है। नित्य का भाव होता है- सदा रहने वाला। ईश्वर की नित्यता का भाव है कि वह सदा-सर्वत्र, एकरस, एक रूप हो निर्विकार है। अर्थात् वह एक ऐसा अभौतिक पदार्थ तत्व है, जिसमें किसी प्रकार का कैसा भी परिवर्तन-विकार नहीं होता न ही आता है। अर्थात् एक जीवित चेतन सत्ता है वह। अतः आर्य समाज मानता है कि ईश्वर की उपासना किसी विशेष स्थान पर किसी विशेष रूप को सजा कर और किसी विशेष प्रकार के वस्त्रादि पहन कर, किसी भौतिक वस्तु को देखकर और न ही इसके लिए लम्बी-लम्बी यात्रायें करके, न ही घण्टों लाईनों में खड़े होने की जरूरत है। क्योंकि वह नित्य, सर्वव्यापक ईश्वर हमारे हृदयों में सदा विराजता है। अतः केवल दिल की भावनाओं के साथ याद करने, जुड़ने की जरूरत है। 'अपना प्रभु अपने दिल में है' भावना को भरने की ही जरूरत है।

ईश्वर स्वरूप- आईए! अब कुछ ईश्वर के स्वरूप पर भी विचार कर लें। ईश्वर का एक मुख्य गुण सर्वव्यापक है। सर्वव्यापक होने से वह स्वतः सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, सर्वेश्वर, सर्वाधार, सर्वकर्त्ता आदि गुणयुक्त है। सर्वव्यापक संख्या में एक ही होता है। दो होने पर व्यापकता बट जाएगी। ऐसे ही सर्वव्यापक निराकार ही होता है, क्योंकि एकदेशी ही साकार होता है।

कर्त्ता द्वारा की जाने वाली क्रिया तभी होती है, जब उसके साथ कर्त्ता का सम्बन्ध होता है, वहाँ उसका अस्तित्व होता है। संसार रूपी रचना सब जगह चल रही है। अतः उसका कर्त्ता सब स्थानों पर होने से स्वतः सर्वव्यापक सिद्ध हो जाता है। तभी वह वहाँ-वहाँ प्रकृति को प्रेरणा देकर जगत् रचता है। सर्वव्यापक होने से जब जहाँ जो कुछ होता है, वह उस उसको अपनी सर्वज्ञता से जानता है। अतः कोई कभी-कहीं भी कुछ उससे छिपा नहीं सकता। अतः वह प्रत्येक के सभी कर्मों को यथा समय यथायोग्य जानता और कर्मफल देता है। अतः यह भ्रम पालना सर्वथा निरर्थक है कि हम ऐसे-ऐसे यह बात छिपा लेंगे या इससे ऐसे बच जायेंगे।

किसी बात की परीक्षा, जाँच सच्चाई से होती है और सच्चाई का पता कार्य-कारण के नियम से ही होता है। अतः जिस ढंग से जैसे साधनों से जिस स्थिति में आपस के तालमेल द्वारा जो कार्य सफल होता है, उसी को ही उस कार्य का कारण कहा जाता है। जैसे कि रसोई में प्रत्येक तैयार होने वाला पकवान इस दृष्टि से स्पष्ट है। ठीक ऐसे ही ईश्वर की सत्ता की सिद्धि के लिए संसार को बनाने-चलाने वाले के रूप में युक्ति दी जाती है। अतः जिस स्वरूप गुण वाला ईश्वर ऐसा कर सके वही ईश्वर का स्वरूप है। इसीलिए ऊपर की चर्चा में ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए सर्वव्यापक शब्द के विचार में यह सब दर्शाया गया है।

श्री भद्रसेन जी
१८२, शालीमार नगर,
होशियारपुर-१४६००१ (पंजाब)

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

समय-समय पर इस धरती पर जनमानस को सन्मार्ग दिखाकर सही रास्ते पर लाने के लिए महापुरुष आदि अवतरित होते रहते हैं। गुरु नानक देव जी भी उनमें से एक थे। उन्होंने लोगों को झूठ, पाखण्ड, आडम्बर, जादू-टोना, मूर्ति पूजा आदि से छुटकारा दिलवाने के लिए सन्देश दिया और लोगों को सत्य के मार्ग पर चलने का तरीका बताया। श्री गुरु नानक देव जी सिख धर्म के संस्थापक थे और प्रथम सिख गुरु थे। उन्होंने उस समय धरती पर जन्म लिया जब दुनिया अंधविश्वास, झूठ, मूर्ति पूजा तथा प्रथम मुगल बादशाह, बाबर तथा उसके क्रूर सैनिकों के हाथों दुःखी हो रही थी। लोगों में निराशा तथा अनिश्चितता घर कर गई थी।

गुरु नानक देव

लोगों को कुछ सूझ नहीं रहा था। श्री गुरु नानक देव जी का जन्म १५ अप्रैल, १४६९ में पाकिस्तान के तलवण्डी में एक किसान के घर में हुआ। उनके पिता मेहता कालू तथा माता

तृप्ता थीं। जब गुरु नानक देव जी पैदा हुए तो पण्डित जी ने कहा आप बहुत भाग्यशाली हो..! जब मेहता कालू ने पण्डित जी को उस बच्चे के नामकरण के बारे में पूछा तो पण्डित जी ने कहा वह १३ दिन के बाद सोच समझकर बताएँगे और १३ दिन गुजरने के बाद पण्डितजी मेहता कालू जी के घर आए और कहा..... इस बच्चे का नाम होगा..... नानक.....! इस पर हैरान होकर मेहता कालू ने पण्डित जी को कहा... यह कैसा नाम है! ना यह हिन्दुओं का नाम है और ना मुसलमानों का.....! इस पर पण्डित जी ने कहा.... यह एक ऐसा नाम है जिसके हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही चाहने वाले होंगे, यह बच्चा होनहार तथा प्रतापी बनेगा। यह तो जग को तारने का काम करेगा....। वे इस धरती पर मानवता का भला करने तथा परलोक सुधारने के लिए आए थे और लोगों को सीधे रास्ते पर चलाने के लिए कोशिश की। इन्हें गुरु नानक देव, नानक शाह, बाबा नानक आदि नामों से याद करके श्रद्धालु नतमस्तक होते हैं।

नानक देव का मन बचपन से ही दुनियावी बातों में नहीं लगता था और अध्यात्म उनके लिए आकर्षण का कारण था। उनका विवाह १६ साल की उम्र में बीबी सुलखनी से हो गया था! बाद में उनके २ पुत्र श्रीचन्द और लख्मीचन्द हुए! नानक देव के पिता ने उन्हें कुछ पैसे देकर व्यापार में सौदा करने के लिए भेजा। जब वह पैसे लेकर जा रहे थे तब उन्होंने कुछ भूखे साधु-सन्तों को देखा और सारे पैसे उनकी भूख मिटाने के ऊपर खर्च कर दिए और घर आकर अपने पिताजी से सारी बात बताने के बाद कहा.... मैं सच्चा सौदा कर आया हूँ..।

नानक देव की एक बड़ी बहन थी। उसका नाम था नानकी। उसका विवाह भाई जयराम के साथ हुआ था। उनकी कोई

सन्तान नहीं थी। इसलिए नानकी और भाई जयराम का नानक देव के साथ विशेष लगाव था। भाई जयराम ने नानक देव को दौलत खान लोधी के मोदी खाने में मुंशी के तौर पर काम पर लगवाया। नानक देव जी सभी जरूरतमन्दों को उनकी जरूरत की चीजें देने लगे। कई लोग तो बिना पैसे दिए ही अपनी जरूरत का सामान ले जाते थे। इस बात की शिकायत कुछ लोगों ने दौलत खान लोधी को की कि नानक देव तो उनकी दुकान लुटाने पर ही लगे हैं। जब दौलत खान लोधी ने हिसाब-किताब की पड़ताल करवाई तो काम धन्धे में लाभ ही पाया गया, किसी प्रकार की हानि देखने को नहीं मिली। एक बार नानक देव जी नदी में नहाने गए और नदी में डुबकी लगाई और फिर पानी से बाहर ऊपर नहीं निकले। लोगों ने नानक देव के पानी में से ऊपर निकल कर नदी से बाहर आने के लिए बहुत देर तक इंतजार किया और जब नानक देव जी नदी से बाहर नहीं निकले तो घर जाकर लोगों ने नानकी तथा भाई जयराम को सारी बात बताई और कहा कि नानक देव जी तो परलोक सिधार गए हैं। पर बहिन को विश्वास था कि नानक देव इस तरह स्वर्ग नहीं सिधार सकते। और कुछ दिन के बाद जब नानक देव जी सकुशल अपनी बहन के घर पहुँच गए तब नानकी तथा अन्य लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए।

गुरु नानक देव जी ने गलत सामाजिक रीति-रिवाजों, अंधविश्वास, मूर्तिपूजा आदि का विरोध किया। उन्होंने दुनिया को यह बात समझाने की कोशिश की कि घर-बार छोड़े बिना और संन्यासी बने बिना भी अध्यात्म के रास्ते पर चला जा सकता है। उन्होंने समानता, भाईचारा और आपस में प्रेम भावना की शिक्षा दी। यह सब देखकर बाबर के सैनिकों ने यह सोच कर गुरु नानक देव को जेल में डाल दिया कि वह इस्लाम के खिलाफ प्रचार कर रहे हैं। जब वह जेल पहुँचे तो वहाँ कैदियों ने उनके प्रताप को देखकर उनके पाँव छुए। यह बात धीरे-धीरे बाबर तक पहुँची। बाबर खुद नानक देव को देखने के लिए जेल पहुँचा और उनके प्रताप को देखकर इतना प्रभावित हुआ कि उन्हें जेल से तुरन्त रिहा करने का आदेश दिया।

वह जाति-पाँति को नहीं मानते थे और सब लोगों को एक समान समझते थे। उन्होंने ३० साल तक भारत, तिब्बत और अरब देशों में धर्म प्रचार के लिए यात्राएँ कीं। जिन्हें.... उदासियाँ.... कहा जाता है। इन यात्राओं में उनके साथ भाई मरदाना, भाई बाला, भाई लहिणा और भाई रामदास थे। जहाँ भी गुरु नानक देव जी का दिल करता, भाई मरदाना को कहते.. मर्दानाएंआं! रबाब बजाओ और गुरु नानक देव जी अपनी मीठी तथा प्रभावशाली आवाज में भजन गाने लग जाते जिसे सुनकर श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते और उनके अनुयाई बन जाते। उन्होंने ९७४ भजन गाए।

एक बार गुरु नानक देव जी हरिद्वार गए और देखा कि पण्डित जी किसी व्यक्ति को सूर्य की तरफ मुँह करके अपने पितरों को जल देने के लिए कह रहे थे। पूछने पर पण्डित जी ने गुरु नानक देव को कहा कि ऐसा करने से इसके पितरों को जल मिल जाएगा। यह सुनकर गुरु नानक देव जी विपरीत दिशा में जल देने लगे। यह देखकर पण्डित जी ने गुरु नानक देव जी से कहा- यह आप क्या कर रहे हो? इस पर गुरु नानक देव जी ने जवाब दिया कि अगर इस सज्जन के द्वारा दिया गया गंगाजल परलोक में इसके पितरों तक पहुँच सकता है तो यही जल मेरे खेतों तक क्यों नहीं पहुँच सकता। मैं यह जल अपने खेतों की तरफ भेज रहा हूँ। यह सुनकर पण्डित जी को और उस व्यक्ति को बहुत शर्म आई।

गुरु नानक देव जी ने अपने उपदेश में यह कहा कि ईश्वर एक है और सब जीवों में मौजूद है, हमें एक ही ईश्वर की उपासना करनी चाहिए, परमात्मा की भक्ति करने वाले को किसी से डर नहीं लगता, बुरा काम नहीं करना चाहिए, किसी को सताना नहीं चाहिए, दूसरों की गलतियों को माफ कर देना चाहिए और खुद से गलती हो जाने पर परमात्मा से क्षमा याचना करनी चाहिए, जहाँ तक हो सके दूसरों की सहायता करनी चाहिए, औरत और मर्द में कोई भेद नहीं है, दोनों एक दूसरे के बराबर हैं, सदा खुश रहने की कोशिश करनी चाहिए, जाति-पाँति का भेदभाव गलत है, हम सब उसी ईश्वर के द्वारा बनाए हुए बन्दे हैं, लालच में आकर कुछ इकट्ठा नहीं करना चाहिए। गुरु नानक देव जी की शिक्षा के मूल मंत्र थे..... नाम जपो, सिमरन करो, किरत करो अर्थात् मेहनत करो, वंडके खाओ अर्थात् बाँटकर खाओ। कुछ लोगों का कहना है कि गुरु नानक देव का यह वाक्य... बाँट कर खाओ.... सिख धर्म की वर्तमान लंगर व्यवस्था का

आधार है। गुरु नानक देव जी ने इंसानियत का पाठ पढ़ाया और सब किस्म के भेदभाव, पाखण्ड, मूर्ति पूजा, आडम्बर, जादू-टोना आदि का विरोध किया। इस तरह हम कह सकते हैं कि गुरु नानक देव जी एक आध्यात्मिक शख्सियत के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे। उनका कहना था कि परमात्मा एक है और अलग-अलग धर्म के उस तक पहुँचने के अलग-अलग मार्ग हैं। जब गुरु नानक देव जी ने इस धरती पर जन्म लिया, कहा जाता है... धुंध हटी, चानणा होअया अर्थात् लोगों के मन में जो अंधेरा था वह हट गया और उनके मन में ज्ञान रूपी प्रकाश ने स्थान ले लिया। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही धर्मों के लोग गुरु नानक देव जी के शिष्य थे और बहुत ही श्रद्धा के साथ उनके आगे नतमस्तक हुआ करते थे।

गुरु नानक देव जी सिख धर्म के संस्थापक तथा पहले गुरु थे। उनके जन्मदिन को प्रकाश उत्सव के तौर पर भी मनाया जाता है। सिख धर्म के १० गुरु साहिबान हुए हैं। गुरु नानक देव जी पहले गुरु थे। गुरु नानक देव जी ने जपजी साहब की रचना की जो कि सिख धर्म का मूल ग्रन्थ है। दशम पातशाह, संत सिपाही गुरु गोविन्द सिंह जी के बाद... गुरु की परम्परा समाप्त हो गई और गुरु ग्रन्थ साहब को ही अब गुरु साहिबान का रूप मानकर उपासना की जाती है। ज्योति जोत अर्थात् स्वर्गवास सिधारने से पहले गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा को अपना उत्तराधिकारी बनाया, जिन्हें बाद में गुरु अंगद देव जी कहा जाता था। गुरु नानक देव जी ने गुरु गद्दी उनको सौंप दी और उन्हें खडूर साहब, पंजाब में जाकर धर्म प्रचार करने के लिए कहा। भाई लहिणा को गुरु गद्दी मिलने पर गुरु नानक देव जी के दोनों बेटे श्रीचन्द और लक्ष्मीचन्द नाराज तो हुए लेकिन बाद में सब ठीक हो गया। क्योंकि गुरु नानक देव जी ने सब तरफ सब लोगों को दुःखी ही देखा, तभी ही तो कहा जाता है,.. नानक दुखिया सब संसार...।

गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन के आखिरी कई साल करतारपुर में खेतीवाड़ी करने में गुजारे। करतारपुर आजकल पाकिस्तान में है। आखिर ७० वर्ष की आयु में गुरु नानक देव जी दुनिया को सही रास्ता दिखाकर और सिख धर्म की स्थापना करके ज्योति जोत समा गए। जब तक यह दुनिया कायम रहेगी तब तक गुरु नानक देव जी की शिक्षा मानवता का मार्गदर्शन करती रहेगी।

- प्रोफेसर शाम लाल कौशल
मकान नं ९७५ बी/२०, ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१ (हरि.)
चलभाष- ९४१६३५९१४५

डॉ. विवेक आर्य को 'श्रीमती सुमनलता इन्द्रजीत् देव आर्य कार्यकर्त्ता' पुरस्कार

ऋषि मेला अजमेर ४ से ६ नवम्बर २०२२ को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. विवेक आर्य को 'श्रीमती सुमनलता इन्द्रजीत् देव आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार' से आर्यसमाज के कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। डॉ. विवेक आर्य बहुत अधिक व्यस्त होने के कारण पुरस्कार ग्रहण करने जा नहीं सके। इसलिए इस पुरस्कार को आर्यसमाज द्वारका में श्री आनन्द कुमार शर्मा, श्री सुरेश ग्रोवर, श्री हेमचन्द्र अहलावत, श्री जगतदेव आर्य आदि की उपस्थिति में वैदिक विद्वान् श्री वेदनिष्ठ आर्य जी द्वारा आर्यसमाज द्वारका के सम्मानित सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति में डॉ. विवेक आर्य को प्रदान किया गया। डॉ. विवेक ने परोपकारिणी सभा; अजमेर, आचार्य सत्यजित् जी, श्री इन्द्रजीत् देव आर्य जी, डॉ. कविता वाचक्नवी, डॉ. हरीश चन्द्र, आचार्य रविशंकर जी आदि का इस सम्मान के लिए धन्यवाद दिया और भावना व्यक्त की कि ईश्वर की कृपा बनी रहे और स्वामी दयानन्द जी के मिशन के लिए कार्य करने सामर्थ्य इसी प्रकार से बना रहे।

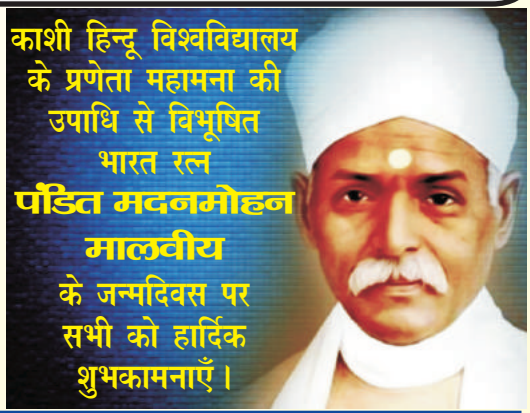

अच्छाई को फौरन अमल में लाना ही फायदेमन्द

सीताराम गुप्ता

जब भी हम फल-सब्जियाँ खरीदने के लिए बाजार जाते हैं तो कई बार वहाँ बहुत अच्छे किस्म के फल दिखलाई पड़ जाते हैं। ऐसे अच्छे कि उन्हें देखकर मुँह में पानी भर आता है और हम फौरन वे फल खरीदकर ले आते हैं। घर पर आकर पता लगता है कि घर पर पहले ही कुछ फल रखे हुए हैं और अगर उन्हें आज ही इस्तेमाल नहीं किया गया तो वे कल तक खराब हो जाएँगे। हम ताजा लाए हुए फलों को रख देते हैं और घर पर पहले से रखे पुराने फल इस्तेमाल कर लेते हैं। लेकिन ताजा फलों को देखकर जो उत्साह मन में भर गया था वो ठंडा पड़ गया क्योंकि पहले से रखे हुए पुराने फल कुछ बासी हो जाने के कारण उतने स्वादिष्ट नहीं लगे।

अगले दिन जब पिछले दिन खरीदे हुए आकर्षक व रसीले फलों के सेवन करने की बारी आई तो भी मजा नहीं आया कारण फल कुछ ज़्यादा ही पक चुके थे। ज्यादा पक ही नहीं चुके थे कुछ ढीले और दागी भी हो गए थे। उनका स्वाद भी थोड़ा बदल चुका था। प्रायः ऐसा ही होता रहता है जीवन में। प्रायः पुरानी चीजों अथवा खाद्य पदार्थों को बचाने के लोभ अथवा चक्कर में नई चीजों को भी पुराना करके इस्तेमाल करने को अभिशप्त होते हैं हम। इससे बचने का क्या उपाय हो सकता है? इसका यही उपाय हो सकता है कि हम पुरानी चीजें समाप्त हो जाने के बाद ही नई चीजें खरीदें और जहाँ तक हो सके पहले केवल अच्छी चीजों का ही इस्तेमाल करें अन्यथा ये दुष्चक्र कभी नहीं टूटेगा और अच्छी चीजें उपलब्ध होने के बावजूद हमें हमेशा खराब चीजें इस्तेमाल करनी पड़ेंगी।

प्रायः यही स्थिति हमारी आदतों अथवा व्यवहार के विषय में होती है। हम बहुत कुछ नया और अच्छा सीखते रहते हैं लेकिन जब उसको जीवन में प्रयुक्त अथवा क्रियान्वयन करने का अवसर आता है तो हम प्रायः नई सीखी हुई अच्छी बातों की उपेक्षा करके पुरानी बातों को ही अपने व्यवहार में लाते रहते हैं। ये स्वाभाविक भी है क्योंकि पुरानी आदतें मुश्किल से छूटती हैं। ऐसा करने के हमारे पास तर्क भी कम नहीं होते। मान लीजिए कि हमने अभी हाल ही में सीखा है कि हमें हर परिस्थिति में केवल सच बोलना है। जब सचमुच सच बोलने का अवसर आता है तो हम ये सोचकर या कहकर सच बोलने अथवा पूरा सच बोलने से पीछे हट जाते हैं कि लोग इतने अच्छे नहीं हैं कि उनके सामने सच बोला जाए या आज सच बोलने का समय नहीं रहा या सच बोलने वाले को लोग मूर्ख समझते हैं और उसे ही सबसे ज्यादा धोखा देते हैं।

प्रायः हम कहते अथवा सोचते हैं कि जब हमारा अच्छे लोगों से वास्ता पड़ेगा तभी हम अच्छा व्यवहार करेंगे अथवा अच्छी आदतों को व्यवहार में लाएँगे। हरेक व्यक्ति के सामने अच्छाई का प्रदर्शन करने का क्या फायदा? वास्तव में हम जो करते हैं वो दूसरों के लिए नहीं अपितु वह स्वयं हमारे लिए ही होता है। अपनी आदतों अथवा व्यवहार द्वारा हम स्वयं

अपने परिवेश व समाज का निर्माण करते हैं। यदि हम बेहतर समाज के निर्माण के लिए कार्य नहीं करेंगे तो हमें अपेक्षाकृत कम बेहतर अथवा बुरे समाज में रहने के लिए विवश होना पड़ेगा। हम जितनी जल्दी अच्छे समाज का निर्माण करने में सफल होंगे उतनी ही जल्दी हमें उस समाज में रहने के लाभ मिलने लगेंगे और उसके लिए सबसे उपयुक्त समय आज का ही हो सकता है। सम्भव है भविष्य में हमें इसके लिए अवसर ही न मिले।

जिस प्रकार से हम अच्छी तरह से पके हुए ताजा फलों का सेवन करके अधिक स्वाद व ऊर्जा पा सकते हैं और बासी

फलों के सेवन से उत्पन्न हानिकारक स्थितियों से बच सकते हैं उसी प्रकार से नई सीखी हुई अच्छी बातों को व्यवहार में लाकर हम न केवल पुरानी गलत आदतों से मुक्त होकर अपने व्यक्तित्व को अधिकाधिक प्रभावशाली व आकर्षक बना सकते हैं अपितु सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों का स्नेह व सहयोग भी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब हम पके हुए ताजा व अच्छे फलों को बासी अथवा खराब होने से पूर्व सेवन करने की तरह ही जो भी अच्छी बातें हम सीखें उन्हें उसी समय से अपने व्यवहार में लाना प्रारंभ कर दें और जो आदतें अच्छी नहीं हैं उन्हें भूलकर भी प्रयोग न करने का संकल्प लें।

अच्छी चीजों की एक विशेषता ये होती है कि खराब चीजों के साथ मिलकर वे भी खराब हो जाती हैं। यदि हम ताजा फलों अथवा सब्जियों को बासी अथवा खराब फलों व सब्जियों के साथ रख देंगे तो अच्छे फल अथवा सब्जियाँ भी बहुत जल्दी खराब होने लगेंगी। अच्छी चीजें हों अथवा अच्छी आदतें उन्हें खराब चीजों अथवा गलत आदतों के साथ कभी नहीं मिलाना चाहिए या व्यवहार में लाना चाहिए अन्यथा उनके विकृत अथवा दूषित होने में भी देर नहीं लगेगी। जिस प्रकार से अच्छे फलों का समय पर सदुपयोग न होने पर वे खराब हो जाते हैं अथवा हम उन्हें रखकर ही भूल जाते हैं अच्छी बातों को भी शीघ्र व्यवहार में न लाने पर वे भी समयानुसार अनुकूल अथवा उपयोगी नहीं रहतीं अथवा विस्मृति के गर्भ में चली जाती हैं। यदि हम अपने अच्छे विचारों अथवा अच्छी आदतों को कार्यरूप में परिणत नहीं करेंगे तो कालांतर में वे नकारात्मक विचारों के कचरे में दबकर रह जाएँगी जिससे उन्हें जानने व सीखने का कोई लाभ नहीं मिलेगा।

यदि हम हमेशा अच्छे फल खरीदकर लाते हैं तो उनको रोज-रोज बासी करके खाने का क्या औचित्य हो सकता है? ये प्रबंधन की कमी कही जा सकती है। हमें इस आदत को बदलना ही होगा अन्यथा जीवन में कभी अच्छे फल नहीं खा पाएँगे। इसी प्रकार से नई बातों को सीखने का क्या लाभ यदि हम उन्हें अपने जीवन में लागू ही न कर पाएँ? नई बातें जानने व सीखने में हम बहुत रुचि लेते हैं और उसके लिए हर प्रकार का त्याग भी करते हैं। यदि सीखी हुई बातों से लाभान्वित नहीं होंगे तो इस त्याग व प्रयास का कोई महत्त्व ही नहीं रह जाएगा। जहाँ तक बुरी आदतों अथवा व्यवहार का त्याग करने की बात है इससे कभी भी व किसी भी स्तर पर किसी प्रकार की कोई हानि होने की संभावना नहीं होती। अशुभ के त्याग का अर्थ है शुभ के लिए स्थान निर्मित करना। इसलिए अशुभ के त्याग व शुभ के क्रियान्वयन में कभी देर नहीं करनी चाहिए।

एक ही समय पर हम बासी व ताजा फलों का इस्तेमाल करें ये भी कुछ व्यावहारिक सा नहीं लगता। इसी प्रकार से हम अच्छी व बुरी दोनों प्रकार की आदतों को व्यवहार में लाते रहें तो भी बात नहीं बनेगी। बुरी आदतों अथवा व्यवहार का खमियाजा तो हमें भुगतना ही पड़ेगा। यदि हम किसी आयोजन में जाते हैं तो अच्छे से अच्छे कपड़े पहनकर ही जाते हैं। यदि हमने बहुत महँगे व अच्छे कपड़े पहने हैं लेकिन एक या दो चीजें ठीक नहीं हैं तो शेष महँगे अच्छे कपड़े पहनने का भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा अतः हमारे सारे कपड़े ही नहीं जूते, टाई व अन्य सभी वस्तुएँ भी उन्हीं के अनुरूप होनी चाहिए। हमें समग्र रूप से सब कुछ ठीक से करना होगा। हमें अच्छा व्यवहार करना होगा और हर व्यक्ति से अच्छा व्यवहार करना होगा। हमें हर जगह व हर समय अच्छा प्रदर्शन करना होगा तभी बात बनेगी अन्यथा कुछ अच्छी बातें भी बेमानी होकर रह जाएँगी।

- ए. डी. १०६-सी., पीतम पुरा, दिल्ली- ११००३४
चलभाष- ९५५५६२२३२३

अंग्रेजी की गुलामी छोड़ो

गुजरात के स्कूलों में ५जी की तकनीक के बारे में बोलते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कमाल कर दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री की हैसियत से 'अंग्रेजी की गुलामी' के खिलाफ जो बात कह दी है, वह बात आज तक भारत के किसी प्रधानमंत्री की हिम्मत नहीं हुई कि वह कह सके। मोदी ने 'अंग्रेजी की गुलामी' शब्द का प्रयोग किया है, जिसके बारे में पिछले ६०-७० साल से मैं बराबर बोलता और लिखता रहा हूँ और अपने इस विचार को फैलाने की खातिर मैं जेल भी काटता रहा हूँ और अंग्रेजी भक्तों का कोप-भाजन भी बनता रहा हूँ। देश की लगभग सभी पार्टियों के सर्वोच्च नेताओं और प्रधानमंत्रियों से मैं अनुरोध करता रहा हूँ कि हिन्दी थोपने की बजाय आप सिर्फ अंग्रेजी हटाने का काम करें। अंग्रेजी हटेगी तो अपने आप हिन्दी आएगी। उसके अलावा कौनसी भाषा ऐसी है, जो भारत की दो दर्जन भाषाओं के बीच सेतु का काम कर सकेगी? लेकिन हमारे नौकरशाहों और बुद्धिजीवियों के दिमाग पर अंग्रेजी की गुलामी इस तरह छाई हुई है कि उनकी देखादेखी किसी प्रधानमंत्री या शिक्षामंत्री की आज तक हिम्मत नहीं पड़ी कि वह 'अंग्रेजी हटाओ' की बात करे। अंग्रेजी हटाओ का अर्थ अंग्रेजी मिटाओ बिल्कुल नहीं है। इसके सिर्फ दो अर्थ हैं। एक तो अंग्रेजी की अनिवार्यता हर जगह से हटाओ और दूसरा विदेश नीति, विदेश व्यापार और अनुसंधान के लिए हम सिर्फ अंग्रेजी पर निर्भर न रहें। अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य विदेशी भाषाओं का भी इस्तेमाल करें। यदि ऐसा हो तो भारत को महाशक्ति और महासम्पन्न बनने से कोई ताकत रोक नहीं सकती। प्रधानमंत्री के अंग्रेजी-विरोध का आशय केवल इतना ही है लेकिन तमिलनाडु विधानसभा ने सरकार की भाषा नीति के विरुद्ध प्रस्ताव पारित करके वास्तव में तमिलनाडु का बड़ा अहित किया है। गृहमंत्री अमित शाह ने अपने भाषणों में हिन्दी थोपने की बात कभी नहीं की है लेकिन देश के हिन्दी-विरोधी नेता मनगढंत तथ्यों के आधार पर उनकी बातों का विरोध कर रहे हैं। मुझे तो आश्चर्य है कि इस मुद्दे पर कांग्रेस-जैसी पार्टी चुप क्यों है? कम से कम वह गाँधी नाम की इज्जत बचाए। महात्मा गाँधी ने तो यहाँ तक कहा था कि स्वतंत्र भारत की संसद में जो अंग्रेजी में बोलेगा, उसे हम छह माह की जेल करा देंगे। समाजवाद के पुरोधा डॉ. राममनोहर लोहिया ने तो देश में बाकायदा अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन चला दिया था लेकिन उत्तरप्रदेश की समाजवादी पार्टी भी इस मुद्दे पर मौन धारण किए हुए है। सर्वत्र अंग्रेजी के एकाधिकार के कारण भारत के गरीब, विपन्न, ग्रामीण और मेहनतकश लोगों की हालत कार्ल मार्क्स के शब्दों में सर्वहारा की बनी हुई है लेकिन इन सर्वहारा की लूट पर मार्क्सवादियों की बोलती बन्द क्यों है? मोदी ने जो कहा है, यदि वे वह करके दिखा दें तो दक्षिणपन्थी कहे जानेवाले भाजपाई और संघी लोग वामपन्थियों से भी अधिक प्रगतिशील साबित होंगे। यदि देश की सर्वोच्च शिक्षा और सर्वोच्च नौकरियाँ भी भारतीय भाषाओं के जरिए मिलने लगें तो देश के करोड़ों लोगों को सच्ची आजादी मिलेगी। जाति के नाम पर आरक्षण की चूसनियाँ लटकाकर उन्हें पटाने की जरुरत ही नहीं पड़ेगी।

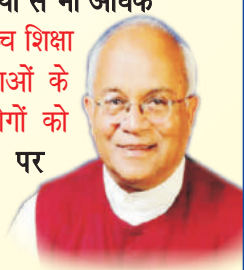

– डॉ. वेदप्रताप 'वैदिक'

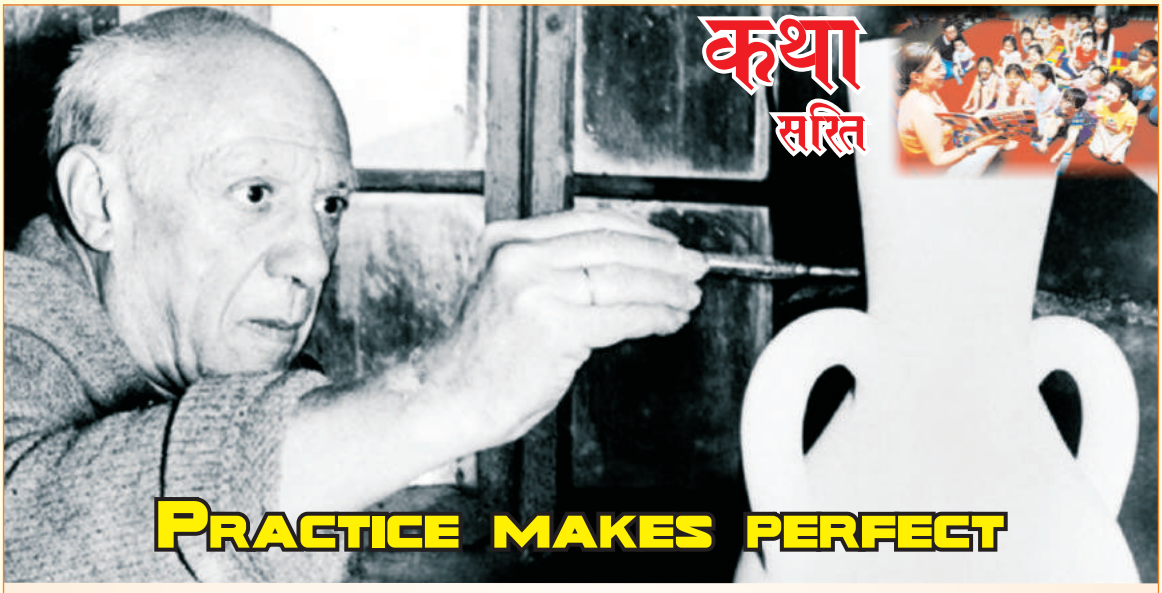

Pablo Picasso एक बहुत ही बेहतरीन आर्टिस्ट थे और उनके आर्ट्स पूरी दुनिया में फेमस हैं।

उनके अनेक प्रशंसक और कला प्रेमी चाहते थे कि उनके पास भी महान् पिकासो की कोई पेंटिंग हो परन्तु पिकासो की पेंटिंग्स इतनी महंगी होती थीं कि उन्हें खरीदना हर किसी के बस की बात नहीं होती थी।

इसी प्रकार के प्रशंसकों में यह महिला भी थी जिसे पिकासो अचानक मिल गए। हुआ यूँ कि एक बार पिकासो बाजार में कुछ सामान ले रहे थे। तभी इस महिला की नजर उन पर पड़ी और उसने पिकासो को पहचान लिया। उसने अपने बैग से एक पेपर निकाला और पिकासो के पास जाकर बोली- 'मैं आपकी कला की बहुत बड़ी प्रशंसक हूँ, क्या आप मेरे लिए एक पेंटिंग बना सकते हैं।'

पिकासो ने उस औरत की तरफ देखकर हलकी सी स्माइल दी और जल्दी से उस पेपर पर एक चित्र बना दिया। महिला गद्‌गद् हो गयी। अब उसने इसकी कीमत पूछी तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। पिकासो उस औरत से बोले कि इस चित्र की कीमत एक मिलियन डॉलर है।

वो औरत हैरान हो गयी और बोली, 'एक छोटा सा चित्र जिसे बनाने में आपको मुश्किल से ३० सेकण्ड भी नहीं लगे उसकी कीमत इतनी अधिक कैसे हो सकती है?

पिकासो ने कहा- यह चित्र इतना महंगा इसलिए है क्यूँकि इस ३० सेकण्ड में बने चित्र के पीछे मेरी जिन्दगी के ३० साल लगे हैं। उस महिला को पिकासो की बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने निश्चय किया कि बाजार जाकर कला-पारखियों को चित्र दिखा इसकी कीमत का निश्चय कराऊँगी। उसने पिकासो को कहा कि मैं यह राशि आपको बाद में भिजवा दूँगी। पिकासो उसके मन की बात समझ चुके थे अतः मुस्कराकर उन्होंने स्वीकृति दे दी।

कुछ समय बाद वो औरत उस पेंटिंग को लेकर उसकी कीमत पता करने गयी तो कला के पारखियों ने उस पेंटिंग की कीमत को सही बताया जिसकी माँग पिकासो ने की थी।

पिकासो की जिन्दगी का ये किस्सा हमें सिखाता है कि अगर किसी काम में हमें खुद को सर्वश्रेष्ठ बनाना है तो उस काम का लगातार अभ्यास करना बहुत जरूरी है। अभ्यास करके ही हम अपने आप बेहतर बना सकते हैं। बड़े से बड़े कलाकार भी जिन्दगी के अन्तिम क्षण तक रियाज करना नहीं छोड़ते। यही कार्य उन्हें सर्वश्रेष्ठ के स्थान पर बनाए रखता है। वस्तुतः अनुभव और योग्यता मनुष्य के भूषण हैं।

इसलिए तो कहा जाता है- Practice makes perfect.

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

जल्दी डिनर करें और स्वस्थ रहें

आजकल intermittent fasting का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। दो खानों के मध्य न्यूनतम १२ घण्टे तथा अधिकतम ३६ घण्टे का अन्तराल intermittent fasting के अन्तर्गत आता है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि यह अन्तराल कम से कम १६ घण्टे का होना चाहिए।

होता क्या है इस दौरान- fasting के समय यकृत में glycogen store लगभग खाली हो जाता है। चयापचयी प्रक्रिया में बदलाव आता है तथा स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव दिखायी देता है।

यहाँ हम intermittent fasting के कुछ ऐसे लाभ बता रहे हैं, विज्ञान जिनका समर्थन करता है-

लिपिडप्रोफाइल

intermittent fasting से कुल कोलेस्ट्रॉल, LDL तथा Triglyceride की मात्रा में कमी आती है। जब कि HDL अर्थात् अच्छे कोलेस्ट्रॉल की मात्रा में बढ़ोतरी होती है। सभी जानते हैं कि कोलेस्ट्रॉल, ट्राइग्लिसराइड, तथा LDL की बढ़ी हुयी मात्रा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है। intermittent fasting ऐसी दशा में लाभकारी हो सकता है।

डायबिटीज में लाभ

intrmittent fasting से रक्त में शुगर की मात्रा नियंत्रित होती है तथा insulin resistence को घटाने के साथ insulin sensitivity में वृद्धि होती है। इससे fasting blood sugar एवं HbA1c में कमी होती है। insulin लेने की आवश्यकता में कमी होती है।

जहाँ तक वजन घटाने का प्रश्न है, intermittent fasting के काफी अच्छे परिणाम आये हैं। इस क्षेत्र में किये गए अनेक अध्ययन बताते हैं कि औसतन सात सप्ताह यह प्रयोग करने से शरीर के वजन में ३ से ७ प्रतिशत तक की कमी आयी है। लम्बे समय तक विशेषज्ञों की देखरेख में किये जाने पर कमर के आसपास की जिद्दी फेट में भी कमी देखी गयी है। इस प्रकार उन सभी risk factors में कमी आती है जिनसे दिल की बीमारी तथा मधुमेह का खतरा बढ़ जाता है। एक शोध कई वर्षों तक २६०६२ पुरुषों पर करने पर पाया गया कि देर रात्रि भोजन करने की शैली को छोड़ देने तथा खाने के मध्य अन्तराल बढ़ाने से दिल की बीमारी का खतरा कम हो जाता है।

यद्यपि intermittent fasting के लाभ ही लाभ हैं परन्तु फिर भी हर कार्य के कुछ साइड इफेक्ट भी होते हैं। २०१७ में की गयी एक समीक्षा में इनका परिगणन किया गया है.

- increased feelings of hunger
- heightened irritability
- worsened mood
- increased thoughts about food
- fatigue
- fears of feeling out of control around food
- overeating during eating windows
- difficulty in concentrating.

साभार- अन्तर्जाल

समाचार

दयानन्द पैराडाइज स्कूल को मिला स्कूल एक्सीलेंसी अवार्ड-2022

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर दयानन्द पैराडाइज स्कूल-आबूरोड, राजस्थान को स्कूल एक्सेलेंसी अवार्ड-२०२२ प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के तहत दयानन्द पैराडाइज स्कूल को भारतवर्ष के ५०० बेहतरीन एवं उत्कृष्ट स्कूल में शामिल किया गया।

ब्रेनफिड मैगजीन, बेंगलुरु एवं ईटी-टेक ने विद्यालय के उत्कृष्ट शैक्षिक एवं सह शैक्षणिक गतिविधियों का अवलोकन करने के बाद स्कूल का चयन किया। इसके अन्तर्गत तीन दिवसीय १०वीं नेशनल एजुकेशन कॉन्क्रेंस का आयोजन इंडिया एक्सपो सेन्टर, ग्रेटर नोएडा में किया गया। जहाँ विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रवीण आर्य एवं एडमिनिस्ट्रेटर सन्तोष गुप्ता को भारत सरकार के न्याय एवं कानून राज्य मंत्री श्री सत्यपाल सिंह बघेल एवं क्षेत्रीय विधायक श्री पंकज सिंह ने विद्यालय के उत्कृष्ट कार्य के लिए स्कूल एक्सलेंसी अवार्ड तथा सर्टिफिकेट प्रदान कर पुरस्कृत किया।

इस कार्यक्रम में समूचे भारत वर्ष से लगभग दो हजार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिसमें सीबीएसई बोर्ड के निदेशक डॉ. बिश्वजीत साहा एवं शिक्षा जगत् के कई अधिकारियों ने शिरकत की।

इस अवसर पर न्यास के अध्यक्ष-श्री सुरेशचन्द्र आर्य, सचिव-श्री मोतीलाल आर्य एवं विद्यालय के शिक्षा सलाहकार व डीएवी स्कूल के पूर्व प्रान्तीय निदेशक श्री एम. एल. गोयल ने विद्यालय के प्रधानाचार्य को बधाई देते हुए विद्यालय एवं विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

जम्मू की वादियाँ वेद मन्त्रों से गूँज उठी

स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान रहा- राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

'देश के शहीदों का बलिदान स्मरण रखें- राजेन्द्र शर्मा (महापौर जम्मू)'

रविवार १३ नवम्बर २०२२ को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में आर्य समाज जानीपुर कॉलोनी, जम्मू में 'आजादी का अमृत महोत्सव' आयोजित किया गया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में सर्वाधिक योगदान आर्य समाज का रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा लेकर हजारों नौजवान आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े। सबसे पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही कहा कि कोई कितना ही करे पर स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम है। कांग्रेस के इतिहासकार डॉ. सीतारामय्या ने भी लिखा कि देश की आजादी की लड़ाई में ८० प्रतिशत आर्य समाजी जेलों में थे। सरदार पटेल ने भी कहा कि आर्य समाज ने हैदराबाद सत्याग्रह के माध्यम से यदि बीज न डाला होता तो ५०० रियासतों को इकट्ठा करने का कार्य न हो पाता।

जम्मू के महापौर राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है हमें देश के शहीदों के बलिदान को याद रखना है और राष्ट्रीय एकता अखण्डता की रक्षा की शपथ लेनी है।

विशिष्ट अतिथि सुषमा शर्मा (राष्ट्रीय अध्यक्ष मानवाधिकार व महिला आयोग जम्मू) ने समाज निर्माण में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि नारी शक्ति को सम्मान दीजिए वह ही परिवार, समाज व राष्ट्र की धुरी है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य वेदांशु शास्त्री ने यज्ञ करवा कर किया। इस अवसर पर दिल्ली से प्रवीण आर्य पिंकी, अरुण आर्य (जम्मू), शिशुपाल आर्य, सुरेन्द्र वर्मा के मधुर भजन हुए।

जम्मू कश्मीर के प्रदेश अध्यक्ष सुभाष बब्बर ने सभी अतिथियों का हार्दिक आभार किया व आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री ने मंच संचालन किया। प्रमुख रूप से जम्मू के पार्षद् नीना गुप्ता, नीता शर्मा, सुनीता गुप्ता, दिनेश गुप्ता आदि उपस्थित थे।

आर्य नेत्री रूही बब्बर, कपिल बब्बर, कृष्ण लाल राणा, अरुण गुप्ता, रितिक सैनी, मुकेश मैनी आदि ने व्यवस्था सम्भाली। ऋषि लंगर प्रसाद लेकर सभी उत्साह के साथ विदा हुए। - प्रवीण आर्य, मीडिया प्रभारी

सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी का निधन।

आर्य जगत् में शोक की लहर।

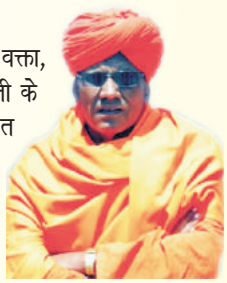

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी, प्रखर वक्ता, वैदिक विद्वान्, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य भक्त, श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल; गोमत (खैर) जिला-अलीगढ़ के अधिष्ठाता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी (पलवल) हरियाणा का ७ नवम्बर रात्रि ८.३० बजे निधन हो गया। वो पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी अन्त्येष्टि उनकी इच्छानुसार गुरुकुल मंझावली यमुना तट हुई। सत्यार्थ सौरभ एवं न्यास परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि। - भवानीदास आर्य; मंत्री-न्यास

आर्य गुरुकुल रानी बाग में मनाया दीपोत्सव

आर्य गुरुकुल रानी बाग एवं शान्ति देवी आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार द्वारा दीपोत्सव का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में गुरुकुल की छात्राओं ने दीप एवं रंगोली बनाकर बहुत सुन्दर सजावट की एवं रंगोली के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र को छात्राओं ने बनाकर सबका मन मोह लिया।

हलचल

निर्धन बच्चों को प्रशिक्षण दिया

बच्चों के जीवन में प्रशिक्षण का अत्यधिक महत्व है और जब वह प्रशिक्षण संस्कार, शारीरिक विकास और सामाजिक विकास के लिए

मिले तो निश्चय ही वो शिक्षार्थी भविष्य में देश और समाज की उन्नति के लिए कार्य करने में सक्षम होगा। प्रशिक्षण की महत्वता को समझते हुए आर्य समाज सूरजमल विहार के प्रधान श्री अशोक गुप्ता जी व मंत्री श्री सुभाष ढींगरा जी द्वारा समाज में बच्चों को ट्यूशन और लड़कियों के लिए सिलाई सिखाने की योजना शुरू की है। जिसके अन्तर्गत आसपास की निर्धन बस्तियों के बच्चे समाज में पढ़ने आते हैं व बिटियाऐं सिलाई सीखती हैं। आज उन्हीं बच्चों और उनके अभिभावकों के साथ यज्ञ किया गया। पश्चात् सभी को वस्त्रादि भेंट किए गये। कार्यक्रम के बाद सभी ने सहभोज भी किया। यज्ञ में प्रधान श्री अशोक गुप्ता जी व मंत्री श्री सुभाष ढींगरा जी भी सम्मिलत हुए व सभी को आशीर्वाद दिया। भाई करण आर्य यज्ञ के पुरोहित रहे। जिन्होंने अपने वक्तव्य के माध्यम से बच्चों को नैतिक शिक्षा का सन्देश दिया।

सुप्रसिद्ध समाजसेवी भाई गोविन्द दीक्षित जी को मातृशोक

नगर के सुप्रसिद्ध समाजसेवी भाई गोविन्द दीक्षित जी की माता श्रीमती पुष्पादेवी का निधन ६ नवम्बर २०२२ को हो गया। इससे कुछ समय

पूर्व ही आपके पिताश्री महेश चन्द्र जी दीक्षित का भी देहावसान हो गया था। श्री महेश जी एवं श्रीमती पुष्पादेवी जी दोनों ही आर्यसमाज व इस न्यास से जुड़े हुए थे और सकारात्मक भाव रखते हुए इन संस्थाओं को सम्बल प्रदान करते थे। लघु अन्तराल में माता-पिता दोनों का वियोग अत्यन्त कष्टकारी है। परन्तु ऐसी स्थिति में विधाता का अधिकार क्षेत्र मानकर संतोष करना ही अभीष्ट है। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों की ओर से हार्दिक संवेदना सम्प्रेषित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

- डॉ. अमृतलाल तापड़िया; संयुक्त मंत्री-न्यास

आर्य समाज के गुरुकुल की छात्राओं ने मनवाया अपना लोहा

पिछले अनेक वर्षों से गुरुकुल की छात्र-छात्राएँ विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते रहे हैं। अभी नवम्बर २०२२ में यूजीसी द्वारा आयोजित नेट एवं जेआरएफ परीक्षा में गुरुकुल की छात्राएँ भावना, ज्योति, प्रतिभा, शैफाली, विश्रुति, विश्वम्भरा, नेहा, अंजली, तनुश्री, रुचिता तथा अवनि ने सफलता प्राप्त की है। इन सबको न्यास की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

- भँवर लाल गर्ग; कार्यालय मंत्री-न्यास

नवीन कक्षों का लोकार्पण

आर्य समाज; हिरणमगरी, सेक्टर-४, उदयपुर के नेतृत्व में दयानन्द कन्या विद्यालय, उदयपुर दिन प्रतिदिन उन्नति के सोपान चढ़ रहा है। बच्चों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए कुछ कमरों की सख्त आवश्यकता थी। इस हेतु श्रीमती शारदा गुप्ता ने कस्तूरी देवी गुप्ता की स्मृति में एवं श्री हजारीलाल जी आर्य ने एक-एक कमरे का निर्माण

करवाया। वहीं कुकिंग कक्षा के लिए प्रायोगिक कक्ष का निर्माण श्री अविनाश तापड़िया जी (सुपुत्र डॉ. अमृतलाल तापड़िया) ने करवाया। ये सभी दानदाता धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने बालिकाओं की शिक्षा को सुगम बनाने के लिए यह पवित्र दान दिया है। इन कक्षों का लोकार्पण श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य के करकमलों द्वारा आर्यजनों की उपस्थिति में किया गया। लोकार्पण से पूर्व यज्ञानुष्ठान को सम्पन्न किया गया।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०७/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०७/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), प्रधान आर्य समाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषादेवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री हर्षवर्द्धन आर्य; नवादा (बिहार), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला (हरियाणा)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 17 पर अवश्य पढ़ें।

वेद ज्ञान

वेद की भाषा के सम्बन्ध में महर्षिवर देव दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं- 'जो किसी देशभाषा में प्रकाश करता तो ईश्वर पक्षपाती हो जाता क्योंकि जिस देश की भाषा में प्रकाश करता उसको सुगमता और विदेशियों को कठिनता वेदों को पढ़ने-पढ़ाने की होती। इसलिए संस्कृत में ही प्रकाश किया, जो किसी देश की भाषा नहीं और वेद भाषा अन्य सब भाषाओं का कारण है उसी में वेदों का प्रकाश किया। जैसे ईश्वर की पृथिवी आदि सृष्टि सब देश और देशवालों के लिए एकसी और सब शिल्प विद्याओं का कारण है। वैसे परमेश्वर की विद्या की भाषा भी एकसी होनी चाहिए कि सब देश वालों को पढ़ने पढ़ाने में तुल्य परिश्रम होने से ईश्वर पक्षपाती नहीं होता। और सब भाषाओं का कारण भी है।'

वेद ज्ञान किस प्रकार दिया गया

अब प्रायः एक शंका उपस्थित की जाती है कि जब परमेश्वर निराकार उसके मुखादि अवयव नहीं हैं तो उसने वेद ज्ञान मनुष्यों को किस प्रकार दिया? क्योंकि पढ़ाने तथा सिखाने में मुख (वाणी) की आवश्यकता होती है। उसका समाधान यह है कि वाणी से शब्दोच्चारण की आवश्यकता अपने से भिन्न व्यक्ति को बोध कराने हेतु होती है। जब व्यक्ति मन ही मन में बात करता है अर्थात् उसके अपने अन्दर ही संकल्प विकल्प प्रश्नोत्तरादि चलते रहते हैं तो क्या वाणी का व्यवहार होता है?नहीं। एक बात और विचारणीय है कि दूरस्थ व्यक्ति को सम्बोधित करने हेतु हमें जोर से अथवा लाउडस्पीकर आदि से बोलना पड़ता है पर जब वही व्यक्ति बिल्कुल पास आ जाता है तो उसे कहने का रूप फुसफुसाहट जैसा हो जाता है। परन्तु परम पिता परमात्मा तो सर्वव्यापक है,

वेद ज्ञान किस प्रकार दिया गया ?

उद्गा आजदग्निरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः।
अर्वाञ्चं नुनुदे वलम्॥ - ऋग्वेद ८/१४/८

प्रत्येक कल्प के आदि में, प्रभु अपने अन्तर्निहित वेद ज्ञान को ऋषियों के हृदय में उदित करते हैं। जिस प्रकार सूर्योदय से अन्धकार नष्ट होता है उसी प्रकार वेदोदय से अज्ञान नष्ट होता है।

जीवात्मा में व्याप्त है अतः मध्यमा वाक् (जिसमें उच्चारण नहीं होता) में उपदेश ऋषियों के आत्मा में प्रदान कर दिया इसमें क्या आश्चर्य है? जो सर्वशक्तिमान परमात्मा अपने असीम सामर्थ्य से बिना हाथ पैर के अनन्त ब्रह्माण्ड की रचना करता है, उसके लिए बिना वाणी के ऋषियों के मस्तिष्क में ज्ञान का संक्रमण करना अत्यन्त साधारण बात है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- 'परमेश्वर के सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक होने से जीवों को अपनी व्याप्ति से वेद विद्या के उपदेश करने में कुछ भी मुखादि की अपेक्षा नहीं है, क्योंकि मुख, जिह्व से वर्णोच्चारण अपने से भिन्न को बोध होने के लिए किया जाता है कुछ अपने लिए नहीं क्योंकि मुख, जिह्व के व्यवहार करे बिना ही मन में अनेक व्यवहारों का विचार और शब्दोच्चारण होता रहता है। कानों को अंगुलियों से मूंद के देखो, सुनो कि बिना मुख, जिह्व ताल्वादि स्थानों के कैसे कैसे शब्द हो रहे हैं। वैसे जीवों को अन्तर्यामिरूप से उपदेश किया है, किन्तु केवल दूसरों को समझाने के लिए उच्चारण करने की आवश्यकता है। जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तो अपनी अखिल वेद विद्या का उपदेश जीवस्थ स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है। फिर वह मनुष्य अपने मुख से उच्चारण करके दूसरों को सुनाता है। (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास)

वेदों का अर्थ कैसे ज्ञात हुआ ?

एक प्रश्न यह उपस्थित होता है कि आदि मानव वेदभाषा से परिचित न थे फिर अग्नि आदि ऋषियों ने वेदों का अर्थ कैसे जाना? इसका समाधान करते हुए ऋषि लिखते हैं- 'परमेश्वर ने जनाया और धर्मात्मा योगी, महर्षि लोग जब जब जिस जिसके अर्थ को जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए तब तब परमात्मा ने अभीष्ट मंत्रों के अर्थ जनाए। (सत्यार्थ प्रकाश-सप्तम समुल्लास) जिस परम दयालु, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने ज्ञान दिया, भाषा दी उसी ने अर्थों को जनाया इसमें क्या आश्चर्य है? अगर वह अर्थों को न बताता तो ज्ञान किस काम का था।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

CARRY ON MISSY
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
Chitrangada Singh
Over 85 shades
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 December-2022 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

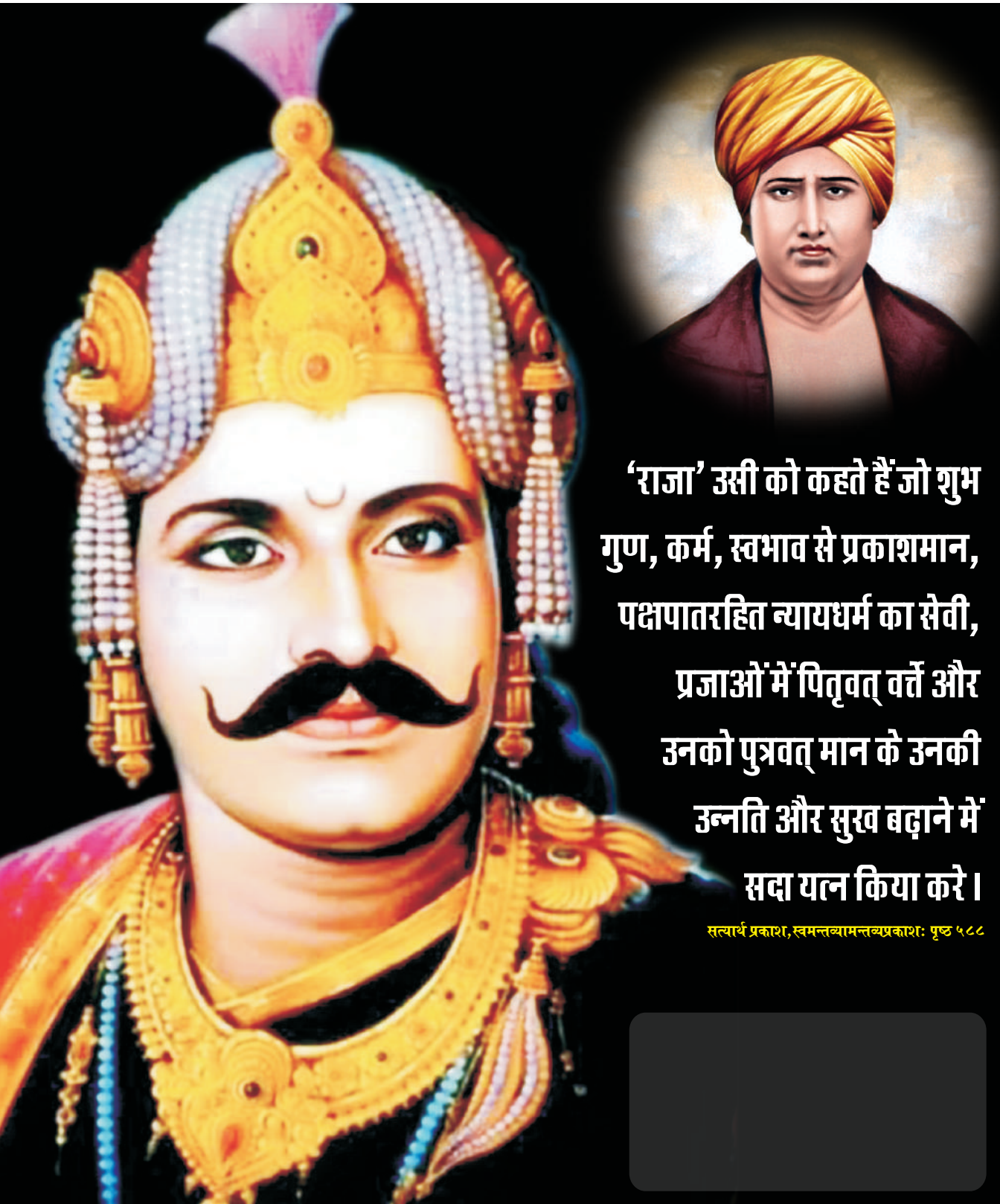

‘राजा’ उसी को कहते हैं जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपातरहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजाओं में पितृवत् वर्त्ते और उनको पुत्रवत् मान के उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न किया करे।

सत्यार्थ प्रकाश, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः पृष्ठ ५८८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर